लंकाधिपति रावण के रहस्य-चमत्कार भरे जीवनवृत्त के साथ ही
शिवोपासना व विभिन्न तंत्र साधनाओं की जानकारी

| पञ्चम परिच्छेद |

## पञ्चम परिच्छेद

रावणमेघनाद सम्वादात्मक

# सदाशिव उपासना

### शिव और ॐकार

मेघनाद के जिज्ञासावश रावण ने शिव उपासना की जिन पद्धतियों को बतलाया उन्हें उसी प्रकार यहाँ प्रस्तुत किया गया है।

शिवजी ने कहा—इसकी सर्वप्रथम उत्पत्ति मेरे मुख से हुई, यह मेरा ही स्वरूप है। यह वाचक है और मैं वाच्य हूँ, यह मन्त्र मेरी मात्रा है। इसका प्रतिदिन स्मरण करना मेरे ही स्मरण करने के समान है। उत्तर की ओर वाले मुख से आकार, पश्चिम की ओर वाले मुख से इकार, दक्षिण की ओर वाले मुख से मकार, पूर्व की ओर मुख वाले विन्दु और मध्य के मुख से नाद उत्पन्न हुआ।

इस प्रकार यह ओंकार पाँच प्रकार से प्रकट हुआ। ये सब एकत्रित होकर ॐ इस आकार से परिवर्तित हो गया। यह सब नामरूपात्मक वेदस्वरूप दोनों कुल (स्त्री-पुरुष भेद) से शिव-शक्ति का बोधक है। इसी से पंचाक्षरात्मक ॐकार की उत्पत्ति हुई है, जो सम्पूर्ण संसार का बोध कराने वाला है। अकार से नकार, उकार से मकार, मकार से 'शि', विन्दु से 'वा', नाद से 'य' प्रकट हुआ है।

इसी पंचाक्षर से पाँच भेद वाली मातृकाएँ (स्वर) प्रकट हुई। उसी से शिरोमन्त्र तथा चार मुखों से त्रिपदा, गायत्री प्रकट हुई। उससे सभी वेद प्रकट हुए, तदनन्तर करोड़ों मन्त्र प्रकट हुए। उस मन्त्र से सिद्धि होती है, परन्तु पंचाक्षर मन्त्र से सब प्रकार की सिद्धियाँ होती है। इस मूल से भुक्ति तथा मुक्ति दोनों की सिद्ध हो जाती है। सभी प्रकार के मंत्रराज साक्षात् सुखभोगों को देने वाले होते हैं।

### ॐ मंत्र का उपदेश

नन्दीकेश्वर ने कहा—तब उन दोनों के गुरु भगवान् शिवजी ने मन्त्र को गुप्त रखने के लिये एक वस्त्र को उनके सिर पर डालकर और उनके सिर पर अपना करकमल रखकर, पार्वती के साथ उत्तर की ओर मुख कर उन्हें उत्तम मन्त्र का उपदेश दिया। यन्त्र और तन्त्र की विधि के अनुसार तीन बार उस मन्त्र का उच्चारण करके उन्होंने उस परम मन्त्र को ग्रहण किया।

तदनन्तर उन दोनों शिष्यों ने दक्षिणा के निमित्त शिवजी के चरणों में आत्मसमर्पण कर दिया। और हाथ जोड़कर उन दोनों (ब्रह्मा और विष्णु) ने उनके सामने देवों के देव संसार के गुरु महादेव से ये वचन कहे।

ब्रह्मा और विष्णु ने कहा—हे निराकार रूप वाले और निराकार होने पर भी परम तेजस्वी आप के लिये नमस्कार है। समस्त संसार के स्वामी तथा सगुण रूप को धारण करने वाले आप के लिये नमस्कार है। ॐकार वाच्य तथा ओंकारात्मक लिङ्ग वाले आपके लिये नमस्कार है। सृष्टि के सर्वप्रथम कर्ता एवं पाँच मुख वाले आपको नमस्कार है।

पंच ब्रह्मस्वरूप, पंचकृत्य, आत्मास्वरूप, ब्रह्म, अनन्त गुण वाले तथा अनन्त शक्तियों से सम्पन्न आपके लिये नमस्कार है। सगुण तथा निर्गुण रूपों को धारण करने वाले शिव नामक परम गुरु के लिये नमस्कार है। इस प्रकार उक्त पदों द्वारा परम गुरु की स्तुति करके ब्रह्मा और विष्णु ने उन्हें प्रणाम किया।

शिवजी ने कहा—हे पुत्रों ! मैंने तुम्हारे उपकार के लिये सभी तत्त्वों का तुम दोनों को उपदेश दिया। और उनका मार्गदर्शन भी कराया। अत: तुम अलौकिक प्रणव (ॐ) मन्त्र का जप करो, यह साक्षात् मेरा स्वरूप कहा गया।

### ॐकार मंत्र जप का काल

इस मन्त्र का जप करने से ज्ञान और भाग्य सुस्थिर होता है और भी कामनाएँ चिर स्थिर हो जाती हैं। अत: इसका जप आर्द्रा नक्षत्र से युक्त चतुर्दशी के दिन करना चाहिए। इससे उस जप का फल अक्षय हो जाता है। आर्द्रा में जब सूर्य हो उस समय इस मन्त्र का जप करने से एक करोड़ गुना फल होता है।

मृगशिरा तथा पुनर्वसु नक्षत्र आदि का भाग भी सदैव आर्द्रा नक्षत्र के समान ही पूजा, होम, तर्पण आदि में समझना चाहिए। प्रात:काल तथा प्रात:काल की सन्धि में इसके दर्शन का महाफल है। अर्धरात्रि में रहने वाली चतुर्दशी का ग्रहण करना चाहिए।

कुछ आचार्य प्रदोष-व्यापिनी चतुर्दशी का ग्रहण करते हैं और कोई आचार्य पर-तिथि से युक्त चतुर्दशी का ग्रहण करते हैं तथा बेर पूजन मेरे पूजन के समान ही है, किन्तु पूजन करने वालों के लिये बेर का पूजन से भी लिङ्ग का पूजन उत्तम है, विशेषकर मोक्षार्थी को लिङ्ग पूजन ही करना चाहिए।

लिङ्ग की पूजा ॐकार मन्त्र से और बेर की पूजा पंचाक्षर मन्त्र (नम: शिवाय) से करनी चाहिए। पूजोपयोगी द्रव्यों से उसकी प्रतिष्ठा स्वयं या पुरोहित आदि से करानी चाहिए। विविध उपचारों से उस लिङ्ग की पूजा करने से भक्त को मेरा पद सुलभ हो जाता है। इस प्रकार ब्रह्मा और विष्णु को उपदेश देकर शिवजी वही अन्तर्धान हो गये।

## लिङ्ग पूजन की विशेषता वर्णन

ऋषियों ने कहा—लिङ्ग की प्रतिष्ठा किस प्रकार करनी चाहिए, उस लिङ्ग का क्या लक्षण है और उसका किस देश-काल में कैसे पूजा करनी चाहिए?

रावण ने कहा—मैं तुम्हारे लिये उसके विधान को कहता हूँ, तुम सावधान होकर सुनो, ग्रह-नक्षत्र आदि से अनुकूल शुभ समय में पुण्यदायक किसी तीर्थ के तट पर अपनी इच्छा के अनुसार मृत्तिकामय, पाषाणमय अथवा धातुमय लिङ्ग की ऐसे स्थान पर स्थापना करें, जहाँ उसका प्रतिदिन पूजन हो सके।

कल्प लक्षण (शिव-पूजाविधान) से युक्त होकर लिङ्ग की पूजा करने से उसका पूर्ण फल प्राप्त होता है, क्योंकि सभी लक्षणों से युक्त की गयी पूजा का फल तत्काल मिलता है।

चर लिङ्ग को आकार में छोटा और स्थिर लिङ्ग को आकार में बड़ा बनवाना चाहिए, क्योंकि इस प्रकार के लिङ्ग श्रेष्ठ होते हैं। ये सभी लक्षणों तथा सिंहासनों से युक्त हो, इस प्रकार शिवलिङ्ग की स्थापना करें।

चरलिङ्ग की स्थापना करने के लिय मंडलाकार अथवा त्रिकोणाकार पीठ को बनवाकर खट्‌वांग (डंडे पर पहनाये हुये शिर:कपाल स्वरूप ध्वजा) के समान बीच में सूक्ष्म लिङ्ग की पीठ (चौकी) महाफल को देने वाली होती है।

पहले मिट्टी, पत्थर तथा लोहा आदि धातु का शिवलिङ्ग बनवाये, जिस वस्तु का लिङ्ग हो उसी की पीठ (चौकी) बनवानी चाहिये। यह स्थावर लिङ्ग के निर्माण की विशेषता है। केवल बाण-लिङ्ग को छोड़कर शेष सभी लिङ्गों का निर्माण पीठ के साथ ही कराना चाहिए।

लिङ्ग की ऊचाँई उसके रचयिता से बारह अंगुल होना उत्तम कहा जाता है। यदि बारह अंगुल से कम ऊँचाई होती है, तो उसका फल भी कम होता है, बारह अंगुल से अधिक हो जाने से कोई दोष नहीं होता। कर्ता की अंगुली से एक अंगुल कम (ग्यारह अंगुल) हो, तो कोई हानि नहीं होती। यही विधान चर लिङ्ग का भी है।

सबसे पहले शिल्प विद्या में निपुण कारीगरों से देवगणों सहित विमान का निर्माण करना चाहिए। उसके भीतरी भाग में जो सुदृढ़ तथा दर्पण जैसा साफ-सुथरा हो, उसे नवरत्नों से अलंकृत करे, पूर्व और पश्चिम दिशा की ओर दो दरवाजे बनवायें।

नीलम, वैदूर्य (लहसुनियाँ), श्याम तथा मरकत मणि, मुक्ता, प्रवाल, गोमेद, हीरा ये नवरत्न हैं। जहाँ लिङ्ग की स्थापना करनी हो उसके बीच में इन रत्नों को रखें।

फिर 'सद्योजातं' आदि वैदिक मन्त्रों से लिङ्ग के पाँचों स्थानों (चारों ओर तथा बीच) में क्रमशः पूजन करके अग्नि में अनेक प्रकार से घी की आहुति देकर पुनः सगुण स्वरूप मेरी, गुरु तथा आचार्य की द्रव्य आदि से पूजा करके और भोजन आदि से बन्धु-बान्धवों का सम्मान करके याचकों के लिये जड़ (मकान, बगीचा आदि) और अजड़ (गाय, घोड़ा आदि) का दान देना चाहिये।

तदनन्तर प्रयत्न पूर्वक स्थावर, जंगम आदि सभी जीवों को सन्तुष्ट करके सुवर्ण तथा नवरत्नों से भरे हुए उस गर्त में 'सद्योजातं' इत्यादि वेद-मन्त्रों का उच्चारण करके परम शुभकारक महादेव का ध्यान करके और महामन्त्र ॐकार तथा नाद की घोषणा कर उसमें लिङ्ग को रखकर उसे उसके आसन के साथ मिला दें।

उसके बाद लिङ्ग के साथ उस पीठ को जोड़ने वाले द्रव्य से दृढ़ता पूर्वक जोड़ दें। इसी प्रकार बेर लिङ्ग की भी वहाँ स्थापना करनी चाहिये। पंचाक्षर मन्त्र से उत्सव के लिये उस बेर को बाहर रखें। बेर को गुरुओं तथा महात्माओं से ग्रहण करना चाहिए।

इस प्रकार लिङ्ग अथवा बेर की पूजा शिवजी के पद को देने वाली है; फिर भी स्थावर एवं जंगम भेद से ये दो प्रकार के कहे गये हैं।

तरु, गुल्म आदि के लिङ्ग को स्थावर कहते हैं। कृमि, कीट आदि को जंगम लिङ्ग कहते हैं। स्थावर की सेवा पानी से सींचना आदि है और उसका तर्पण अन्न आदि से तृप्त करना है। उस सुख की प्राप्ति इस शिव पूजा से होती है, ऐसा विद्वानों को समझना चाहिए।

सभी पीठ प्रकृतिमय होते हैं और सभी लिङ्ग ज्ञान स्वरूप होते हैं, जिस प्रकार शिवजी सदैव पार्वती को अपनी गोद में लेकर स्थिर रहते हैं, उसी प्रकार यह लिङ्ग सदैव पीठ को धारण किये धारण रहता है।

इस प्रकार लिङ्ग की विधिवत् स्थापना करके विविध प्रकार के उपचारों से उसकी यथाशक्ति नित्य पूजा करें और उसके ऊपर ध्वजा आदि उपहारों को भी समर्पित करें। साक्षात् शिवजी के पद को देने वाली लिङ्ग की इस प्रकार स्थापना करें, अथवा शिवलिङ्ग की स्थापना कर उसकी षोडश उपचारों से यथाविधि पूजा करें। इससे शिवपद की प्राप्ति हो जाती है।

## शिवलिङ्ग पूजन विधान

पूजा का क्रम इस प्रकार है—आवाहन, आसन, अर्घ्य, पाद्य, आवाहन सम्बन्धी आचमन, स्नान, अभ्यंग (उद्वर्तन), वस्त्र, गन्ध, धूप, दीप आदि को अर्पित करें।

निराजन, ताम्बूल, नमस्कार, विसर्जन अथवा अर्घ्य आदि को समर्पित करके नैवेद्य समर्पण करने तक यथाविधि कर्म करें। तदनन्तर अभिषेक, नैवेद्य, नमस्कार और तर्पण इन्हें यथाशक्ति प्रतिदिन करें; ये शिवपद को प्रदान करते हैं।

मनुष्य द्वारा स्थापित, कृषियों द्वारा स्थापित, स्वयं प्रकट हुए अथवा नये स्थापित लिङ्गों को यथोचित्त उपचारों द्वारा यथायोग्य पूजा-सामग्री समर्पित करने से भी कुछ ना कुछ फल की प्राप्ति होती ही है।

प्रदक्षिणा तथा नमस्कार करने से भी शिवपद की प्राप्ति होती है। प्रतिदिन नियम से शिव-दर्शन करने मात्र से भी शिव पद की प्राप्ति होती है।

पीसी हुई मिट्टी में मिलाये गये गाय के गोबर से, कनेर के फूल से, अनेक प्रकार के फलों से, गुड़ से, मकवन से, भस्म से, विविध अन्नों से अपनी इच्छा के अनुसार यत्नपूर्वक लिङ्ग का निर्माण करके अन्त में उसकी पूजा करें।

कुछ विद्वान अंगूठे में ही शिव जी की पूजा करते हैं, क्योंकि लिङ्ग पूजा जहाँ भी करें इसका कोई निषेध नहीं है।

### शिप प्राप्ति के उपाय

भगवान् शिव अपने भक्त के प्रयत्न के अनुसार सर्वत्र फल देते हैं, अथवा लिङ्ग का दान या उसका मूल्य श्रद्धा पूर्वक शिवभक्त को देने से शिवपद की प्राप्ति हो जाती है।

अथवा प्रतिदिन दस हजार ॐकार का जाप करें। अथवा दोनों सन्ध्या कालों में एक-एक हजार ॐकार का जप करने से शिव पद की प्राप्ति होती है। जप के समय मकारान्त 'ओम्' मन को शुद्ध करता है। समाधिकाल में मानसिक जप तथा सभी समय उपांशु (जो दूसरे को सुनायी न पड़े) जप करना चाहिये।

विन्दु नाद युक्त प्रणव (ॐ) मन्त्र सभी जपों में समान होता है। अथवा श्रद्धा-भक्ति से प्रतिदिन दस हजार पंचाक्षर मन्त्र (नमः शिवाय) का जप करें। अथवा दोनों सन्ध्या कालों में एक-एक हजार पंचाक्षर मन्त्र का जप करें। इससे शिव पद की प्राप्ति हो जाती है।

ब्राह्मणों को पंचाक्षर मन्त्र के आदि में ॐ लगाना चाहिए। और फल प्राप्ति के लिये इस मन्त्र को विधिपूर्वक गुरु से ग्रहण करना चाहिए। गुरु को घटनास्थल तथा मातृकान्यास करने वाला, मन्त्र दीक्षा को जानने वाला, सत्यवक्ता एवं आत्मज्ञानी होना चाहिए।

ब्राह्मणों को जप करते समय नमः शब्द पहले लगाना चाहिये और दूसरे अधिकार प्राप्त वर्णों को नमः अन्त में लगाना चाहिए। यथा—ॐ नमः शिवाय और ॐ नमः शिवाय।

कुछ विद्वान् स्त्रियों को भी नमः का प्रयोग अन्त में करना चाहिए; ऐसा कहते हैं। कुछ विद्वानों का मत है कि ब्राह्मणों की स्त्रियाँ भी नमः शब्द का प्रयोग पहले ही करें।

इस प्रकार पाँच करोड़ जप करके मनुष्य सदाशिव के समान हो जाता है। एक, दो, तीन, चार करोड़ जप करके भक्त ब्रह्मा, विष्णु तथा शिव के पद को प्राप्त हो जाता है अथवा एक-एक अक्षर का अलग अलग एक-एक लाख जप करें।

अथवा मन्त्र के जितने अक्षर हों उतने लाख जप करने से भक्त को शिवपद की प्राप्ति होती है। अथवा हजार दिन में दस लाख करे। प्रतिदिन मन्त्र का जप करके ब्राह्मण-भोजन कराने से इष्टकाल की सिद्धि होती है। प्रतिदिन प्रातःकाल ही एक हजार आठ गायत्री का जप करे।

ब्राह्मण को चाहिए कि वह शिव पद को प्रदान करने वाले वेद मन्त्रों को तथा सूक्तों का प्रतिदिन नियमपूर्वक जप करें। एक दशार्णमन्त्र को सौ से अधिक जितना हो सके उतना जप करें, सौ से कम ना जपे; भले ही वह हजार तथा दस हजार हो, किन्तु सौ से कम ना हो।

वेद का पारायण करने से भी शिव पद की प्राप्ति होती है, अन्य अनेक मन्त्रों को उनकी अक्षर-संख्या के अनुसार उतने लाख बार जपे। एकाक्षर मन्त्रों का एक करोड़ जप करें, उसके बाद भक्तिपूर्वक होकर एक हजार परम मन्त्र ॐकार का जप करें।

इस प्रकार यथाशक्ति जप करने से क्रमशः शिवपद की प्राप्ति होती है, अपने मन को प्रिय लगने वाले एक मन्त्र का जप मरण-पर्यन्त करते रहना चाहिये। ॐकार मन्त्र का एक हजार जप करने से शिवजी की आज्ञा से सभी प्रकार के मनोरथ की प्राप्ति हो जाती है।

फूल लगाना, बगीचा लगाना, उनके मन्दिर को साफ करना आदि कार्य शिवजी के लिये अथवा शिवजी के उपयोग के लिये करने वाला व्यक्ति शिवपद को प्राप्त करता है। प्रतिदिन भक्तिपूर्वक शिवालय में निवास करें। शिवभक्ति जड़ तथा चेतन सभी को सुख भोग तथा मुक्ति प्रदान करती है।

इसलिये शिव क्षेत्र में मृत्यु-पर्यन्त निवास करना चाहिए। मनुष्य द्वारा स्थापित शिव लिङ्ग के चारों ओर सौ हाथ तक का क्षेत्र पूर्णदायक होता है। ऋषियों द्वारा स्थापित शिवलिङ्ग के चारों ओर हजार हाथ तक का क्षेत्र पूर्णतादायक होता है।

देवताओं द्वारा स्थापित लिङ्ग के चारों ओर हजार अरत्नि (बद्धमुष्टि हाथ) स्थान पवित्र होता है। जिस भूमि पर शिवलिङ्ग की स्वयं उत्पत्ति हुई हो वहाँ हजार

धनुष (चार हजार हाथ) तक का स्थान पवित्र होता है। इस प्रकार के पूर्णक्षेत्रों में स्थित बावड़ी, कुआँ, पुष्कर (सरोवर) आदि जलाशयों को शिवगङ्गा समझना चाहिए। ऐसा शिवजी का वचन होता है।

उस क्षेत्र में स्नान, दान तथा जप करने से पावन को शिवलोक की प्रप्ति होती है। मनुष्य को शिव-क्षेत्र में ही मृत्यु पर्यन्त निवास करना चाहिए। मरने के बाद क्षेत्र पिण्डदाह, दशाह, सपिण्डीकरण श्राद्ध, द्वादशा, मासिक कर्म, सांवत्सरिक कर्म (वार्षिक श्राद्ध) जो कुछ शिव क्षेत्र में किया जाता है। उससे वह मानव सभी पापों से मुक्त होकर शीघ्र ही शिव पद को प्राप्त कर लेता है।

अथवा सात या पाँच रात्रि, तीन रात्रि, एक रात्रि शिव क्षेत्र में निवास करने से शिवपद की प्राप्ति होती है। ब्राह्मण आदि वर्ण अपने कर्तव्य एवं आचरण के अनुसार फल को प्राप्त करते हैं। वर्णोद्धार तथा भक्ति से उस फल की वृद्धि होती है।

अत: मानव जो भी अपनी इच्छा से कार्य करता है, उसका शीघ्र ही फल प्राप्त कर लेता है। यदि मानव निष्काम भावना से शिवभक्ति करता है, तो वह साक्षात् शिवपद को प्राप्त कर लेता है।

प्रात:, मध्याह्न, सांयकाल जो भक्त प्रतिदिन शिव की आराधना करता है उसमें प्रात:काल की उपासना नित्य विधि का अंग है। मध्याह्न काल की उपासना कामनाओं की सिद्धि के लिये होती है। और सन्ध्याकाल की उपासना शक्तिदायिनी होती है।

इसी प्रकार रात्रि की पूजा का भी होता है। रात के दोपहर बीत जाने पर निषिद्ध काल (आधी रात) होती है, उस समय की शिवपूजा विशेष फल को देने वाली होती है।

इस प्रकार शिव पूजा करने वाला पुरुष विशेष फल का भागी होता है, विशेषकर के कलियुग में फलसिद्धि कर्म से होती है। उपर वर्णन किये गये किसी भी अधिकार भेद से उपासना करता हुआ सदाचारी तथा पापभीरु पुरुष जैसा कहा है, उस प्रकार के फल को प्राप्त कर लेता है।

ऋषियों ने कहा—हे सूतजी ! अब आप हमसे भूलोक के पुण्य क्षेत्रों का वर्णन कीजिये, जिनका आश्रय लेकर सभी स्त्री तथा पुरुष शिवपद को प्राप्त कर सके। हे सूत! आप उत्तम योगियों में श्रेष्ठ हैं, शिवक्षेत्रों तथा शैवागमों (शिव प्रतिपादक शास्त्रों) के ज्ञाता हैं।

सूतजी ने कहा—आप श्रद्धा से सभी शिव क्षेत्रों तथा शैवागमों के सम्बन्ध में सुनिये, जिसका वर्णन हम आगे के उचित स्थलों पर करेंगे।

## शिव की वैदिक पूजन विधि

सूतजी ने आगे कहा—अब हम वेद के ज्ञाता शिव भक्तों की पार्थिव पूजा का वर्णन करते हैं जो वैदिक मार्ग से ही मुक्ति तथा भुक्ति को प्रदान करती है।

पूर्वोक्त सूत्र द्वारा कही गयी विधि से स्नान करके पहले विधिपूर्वक सन्ध्या वन्दन तथा ब्रह्म यज्ञ करके उसके बाद देव, ऋषि, एवं पितरों का तपर्ण करें।

भलीभाँति अपने नित्य कर्म को समाप्त करके वह भक्त शिवजी का स्मरण कर भस्म एवं रुद्राक्ष को धारण कर सम्पूर्ण फल की सिद्धि के लिये वेद में कही गयी विधि द्वारा परम भक्ति युक्त होकर सर्वश्रेष्ठ पार्थिव लिङ्ग की पूजा करें।

नदी या तालाब के तट पर पर्वत में, वन में, शिव मन्दिर में अथवा किसी भी पवित्र स्थान पर पार्थिव लिङ्ग की पूजा की जाती है। हे ब्राह्मणों ! शुद्ध स्थान से यत्नपूर्वक मिट्टी को लाकर सावधान होकर पार्थिव लिङ्ग की रचना करें।

ब्राह्मणों के लिये सफेद मिट्टी, क्षत्रियों के लिये लाल मिट्टी, वैश्यों के लिये पीली मिट्टी शूद्रों के लिये काली मिट्टी या जो मिल जाये यत्न से उस-उस वर्ण की मिट्टी को लेकर लिङ्ग का निर्माण करे। फिर उसे अत्यन्त पवित्र स्थान में रखें। जल से उसे शुद्ध करके धीरे-धीरे उसकी पिण्डी बनायें। तदनन्तर वेद विधि से उससे पार्थिव लिङ्ग बनायें।

उसके बाद भक्तिपूर्वक भक्ति तथा मुक्ति प्राप्त करने के लिये उस लिङ्ग की स्थापना करें। उसके पूजा की विधि को मैं कहता हूँ—आप लोग विधिवत् सुनों! उसमें 'नमः शिवाय' इस मन्त्र से पूजा के द्रव्यों का प्रोक्षण करें और 'भूरसि' इस मन्त्र से क्षेत्र की सिद्ध करें।

'आपोऽस्मान्' इस मन्त्र से जल को शुद्ध करें। 'नमस्ते रुद्र' इस मन्त्र से फाटिका बन्द करें। 'नमः शम्भवाय' इस मन्त्र से क्षेत्र शुद्धि करें। 'नमः शिवाय' मन्त्र से पंचामृत का भी प्रोक्षण करें। 'नमो नीलग्रीवाय' मन्त्र से भक्तिमान पुरुष शिवलिङ्ग की प्रतिष्ठा करें। भक्तिपूर्वक 'एतत्ते रुद्राय' इस वैदिक मन्त्र को पढ़कर शिवजी को रमणीय आसन अर्पण करें।

'मानो महान्त' इस मन्त्र से उस लिङ्ग पर शिव का आवाहन करें। 'यातेरुद्र' इस मन्त्र से शिवलिङ्ग को आसन पर रखें। 'यामिषुम्' इस मन्त्र से शिवजी का न्यास करे, फिर 'अध्यवोचत्' इस मन्त्र से भक्तिपूर्वक अधिवासन करे। 'असौ जीव' इस मन्त्र से देवता का न्यास करे और 'असौ योवसर्पति' इस मन्त्र से उपसर्पण करे। 'नमोऽस्तु नीलग्रीवाय' इस मन्त्र से पाद्य जल चढ़ायें।

रुद्रगायत्री से अर्घ्य दें और 'त्र्यम्बकम्' इस मन्त्र से आचमन कराये।

'पय:पृथिव्याम्' इस मन्त्र से शिवजी को दूध से स्नान कराये तथा 'दधिक्राव्ण' इससे दधिस्नान कराये। 'घृतंयाव' इस मन्त्र से घृतस्नान और 'मधुव्वाता', 'मधुनक्तम्', 'मधुमात्र' इन तीन मन्त्रों से मधु और खाँड से स्नान कराये, यह सब मिलाकर पञ्चामृत होता है।

अथवा पाद्यमन्त्रों तथा पंचामृत से स्नान कराये। 'मानस्तोके' इस मन्त्र से भक्तिपूर्वक कटिबन्धन करे। 'नमो धृष्णवे' इस मन्त्र से उत्तरीय वस्त्र को धारण कराये। 'यातेहेति' इन चार मन्त्रों से भक्तिपूर्वक शिवजी के लिये शिवभक्त वस्त्र समर्पण करे।

'नम:श्वभ्य:' इस ऋचा से भक्त भक्तिपूर्व गंध चढ़ाये और 'नमस्तक्षभ्य:' इस मन्त्र से अक्षत चढ़ाये। 'नम: पार्याय' इस मन्त्र से फूल चढ़ाये। 'नम: पर्णाय' इस मन्त्र से बिल्वपत्र चढ़ाना चाहिये।

'नम: कपर्दिने' इस मन्त्र से धूप देना चाहिये। 'नम आशवे' इस मन्त्र से दीप अर्पण करे।

'नमो ज्येष्ठाय' मन्त्र से उत्तम नैवेद्य का अर्पण करे। 'त्र्यम्बकम्' इस मन्त्र से पुन: आचमन कराये। 'इमा रुद्राय' इस मन्त्र से शिवजी को फल चढ़ाये।

'नमो व्रज्याय' इस मन्त्र से सभी पदार्थ शिव को अर्पित कर दे। 'मनो महान्त' तथा 'मानस्तोके' इन दो मन्त्रों से रुद्रदेवों की अक्षत चढ़ाकर पूजा करे। 'हिरण्यगर्भ' इस ऋचा से दक्षिणा चढ़ाये।

'देवस्यत्वा' इस मन्त्र से पण्डित अभिषेक करे। दीपमन्त्र द्वारा शिव कां नीराजन करे। 'इमा रुद्राय' आदि तीन ऋचाओं से शिवजी को पुष्पांजलि समर्पित करे। 'मानो महान्त' मन्त्र से विद्वान् प्रदक्षिणा करे।

'मानस्तोके' इस मन्त्र से साष्टाङ्ग प्रणाम करे। 'एष ते' इस मन्त्र से शिवमुद्रा का प्रदर्शन करे। 'यतो यत:' मन्त्र से अभयमुद्रा और 'त्र्यम्बकम्' मन्त्र से ज्ञानमुद्रा का प्रदर्शन करे।

'नम:सेनान्ये' इस मन्त्र से महामुद्रा का प्रदर्शन करे। 'नमो गोभ्य:' मन्त्र से 'धेनुमुद्रा' को दिखलाये। शिवभक्त को चाहिये कि वह पाँच मुद्राओं का प्रदर्शन कर शिवमन्त्र का जप करे और वेदविद् शतरुद्रिय मन्त्र का जप करे।

उसके बाद वेदविद् पंचांग का पाठ करे, तदनन्तर 'देवागातु' मन्त्र से शिवजी का विसर्जन मरे। इस प्रकार विस्तार से शिवपूजा की वैदिक विधि कह दी गयी है।

अब उसी विधि को संक्षेप में सुनो—'सद्योजातम्' इस मन्त्र से मिट्टी का ग्रहण करें, 'वामदेवाय' इस शिवमन्त्र से उसमें जल डाले। 'अघोर' इस मन्त्र से पार्थिवलिङ्ग का निर्माण करे।

'तत्पुरुषाय' मन्त्र से विधिपूर्वक आवाहन करे। 'ईशानः सर्वविद्यानाम्' मन्त्र से वेदी में शिवलिङ्ग को स्थापित करें और सभी विधि को विद्वान् संक्षेप से करे।

पंचाक्षर मन्त्र से अथवा गुरु द्वारा प्राप्त मन्त्र से विद्वान् षोडशोपचार से विधिवत् पूजन करे। संसारस्वरूप तथा संसार के नाशक महादेव का हम ध्यान करते हैं। उग्र स्वरूप तथा उग्र स्वभाव वालों के नाशक चन्द्रशेखर शिव के लिये नमस्कार है।

सुधी पुरुष इस मन्त्र से भी भक्तिपूर्वक शिव का पूजन करे। भक्ति से तथा भ्रम को छोड़कर जो भक्त शिवजी की पूजा करता है, उसे शिवजी फल को देते हैं। इस प्रकार आदरपूर्वक वैदिक विधि से पूजा का वर्णन कर दिया है।

हे ब्राह्मणों! अब साधारण रूप से दूसरी विधि का भी वर्णन किया जा रहा है। शिवनामों के द्वारा पार्थिवलिङ्ग की जो समस्त इच्छाओं को पूर्ण करने वाली पूजा कही गयी है।

हे मुनिवरो! उसे आप लोग मुझसे सुनिये। हर, महेश्वर, शंभु, शूलपाणि, पिनाकधृक्, शिव, पशुपति तथा महादेव इस क्रम से मिट्टी का संग्रह कर तदंतर उसमें जल मिलाये, फिर उससे पार्थिवलिङ्ग तैयार कर प्रतिष्ठा, आहवान, स्नान, पूजा, क्षमा, प्रार्थना तथा विसर्जन करें। ॐकार पूर्वक चतुर्थ्यन्त शिवजी के नामों द्वारा क्रम से भक्तिपूर्वक पूजन की सभी क्रियाओं को करना चाहिए।

भलीभाँति षडङ्ग विधि से स्नान करके तब षडक्षर मन्त्र से शिवजी का ध्यान करे। कैलाश रूपी सिंहासन के ऊपर विराजमान भक्तों द्वारा आनन्द पूर्वक पूजे जाते हुये, भक्तों के अनन्त दुःखों को दूर करने के लिये दावानल के समान, पार्वती द्वारा आलिङ्गन किये गये विश्वभूषण शिवजी का मैं ध्यान करता हूँ।

मैं उस महेश का प्रतिदिन ध्यान करता हूँ जो चाँदी के पर्वत के सदृश सुन्दर, चन्द्रमा को मुकुट के रूप में धारण किये हुये, रत्नों के समान उज्ज्वल शरीर वाले, परशु (फरसा) मृग, वरदान तथा अभय को हाथ में लिये, प्रसन्न मुख वाले पद्मासन पर बैठे हुए, चारों ओर देवगणों से सेवित, व्याघ्र चर्म को धारण किये, संसार के आदि देव, संसार के उत्पत्ति कारण, संसार के समस्त भयों का विनाश करने वाले, पाँच मुखों तथा तीन नेत्र वाले हैं।

इस प्रकार ध्यान करके उत्तम पार्थिव लिङ्ग का पूजन कर, गुरु द्वारा प्राप्त पंचाक्षर मन्त्र का यथाविधि जप करना चाहिए। अनेक प्रकार की स्तुतियों से देवेश को प्रणाम करता हुआ उनकी स्तुति करे। हे ब्राह्मणों ! अनेक प्रकार से शतरुद्री का पाठ करे। तदंतर हाथ में अक्षत एवं फूल लेकर भक्तिपूर्वक इन मन्त्रों से शिवजी की प्रार्थना करे।

हे शिवजी! मैं आपका हूँ, आपका गुणगान ही मेरे जीवन का आधार है, मेरा मन सदा आप पर लगा रहता है। हे कृपानिधे! हे भूतनाथ! ऐसा जानकर मुझ पर प्रसन्न हो। ज्ञान से अथवा अज्ञान से जो मैंने जप, पूजा आदि की है, हे शंकर! वह सब आपकी कृपा से सफल हो। मैं आज महापापी हूँ और आप सबकों पवित्र करने वालों में महान् हैं।

हे गौरीश! ऐसा जानकर जैसा आप चाहे वैसा करे। वेदों, पुराणों, सिद्धान्तों तथा अनेक ऋषियों ने भी ठीक से नहीं जाना। हे सदाशिव! महादेव! मैं आपको कैसे जान सकता हूँ।

हे महेश्वर! जैसे तैसे सब प्रकार से मैं आपका हूँ। हे महेश्वर! आप मेरी रक्षा कीजिये। इस प्रकार शिवजी के ऊपर अक्षत और फूलों को चढ़ा करके मुनिवर! विधिपूर्वक शिवजी को साष्टांग प्रणाम करे।

## पार्थिव पूजन पद्धतिः

प्रात:काल अर्थात् ब्राह्ममुहूर्त अर्थात् **उत्तमा तारकोपेता मध्यमा लुप्ततारका। अधमा अरुणोपेता प्राप्ता सन्धिप्रकीर्तिता।।** में शौच, मुखमार्जनादि से निवृत्त होकर स्वच्छ जल से नहाकर पवित्र वस्त्र को धारण करें तथा प्रात: सन्ध्योपासनादि के पश्चात् उत्तर दिशा में निम्नलिखित श्लोक के द्वारा पृथ्वी की पाद वन्दना कर उपर्युक्त कार्य के लिये अतीव शुद्ध मृत्तिका को ग्रहण करे।

**ॐ उद्धृतासि वराहेण कृष्णेन शतबाहुना।**
**मृत्तिके त्वां प्रगृह्णामि प्रजया च धनेन च।।**

*मृदाहरणमन्त्रः*—**ॐ ह्रौं ह्रीं जूं सः हराय नमः।।**

हे पृथ्वी! वराह, कृष्ण, शतबाहु आदि अवतरणों के द्वारा तुम उद्धारित की गई, इसलिए धन, पुत्रादि की कामना से मैं तुम्हारे रज को ग्रहण करता हूँ।

**'ॐ ह्रौं ह्रीं जूं सः हराय नमः'** इस मन्त्र को मन में पढ़ते हुए मिट्टी लाकर पवित्र स्थान में रखे तथा नीचे लिखे मन्त्र के द्वारा उसमें से कुछ मिट्टी चारों तरफ छिड़क दे तथा उत्तराभिमुख अपना आसन बिछावे।

**ॐ पृथ्वी त्वया धृता लोका देवि त्वं विष्णुना धृता।**
**त्वं च धारय मां देवि पवित्रं कुरु चासनम्।।**

हे पृथ्वी! समस्त जीव तुम्हारे द्वारा ही धारण किये गये हैं और महाविष्णु ने तुमको कूर्म वराहादिरूपों से धारण किया है। तस्मात् हे देवि ! मेरे आसन की संशुद्धि करो। बाद हाथ में तिल्ली (काल) और जीव लेकर अधोलिखित मन्त्र पढ़ता हुआ अपनी रक्षा के लिए अपने चारों ओर फेंक दे।

**अपसर्पन्तु ते भूता ये भूता भूमिसंस्थिता:।**
**ये भूता विघ्नकर्तारस्ते नश्यन्तु शिवाज्ञया।।**

भगवान् शंकर की आज्ञा से पृथ्वी पर रहने वाले सभी अनिष्टकारी जीव यहाँ से दूर हट जायँ। इसके बाद स्वस्थ चित्त से नीचे लिखे मन्त्र से मृत्तिका विचूर्ण करे।

**सद्योजातं प्रपद्यामि सद्योजाताय वै नमो नमः। भवे भवे नातिभवे भवस्व मां भवोद्भवाय नमः।। ॐ ह्रौं ह्रीं जूं सः महेश्वराय नमः।**

मैं यह जानता हूँ कि आप क्षण में ही उत्पन्न (प्रकट) हो सकते हो। इसलिये सद्योजात हर क्षण पैदा होनेवाल आपको नमस्कार है। हे भवोद्भव, आपको अनेकानेक नमस्कार है।

**'ॐ ह्रौं ह्रीं जूं सः महेश्वराय नमः'** इस मन्त्र से मृत्तिका को चूर्ण कर अधोलिखित मन्त्र द्वारा उसे भींगोये।

**ॐ वामदेवाय नमः ज्येष्ठाय नमः श्रेष्ठायः रुद्राय नमः कालाय नमः कलविकरणाय नमः बलविकरणाय नमः बलाय नमः बलप्रमथनाय नमः सर्वभूतदमनाय नमो मनोन्मनाय नमः।**

अखिल विश्व में सबसे बड़े तथा श्रेष्ठ होने के कारण वामदेव तथा ब्रह्माण्ड में रुद्ररूप (भयंकर) आप ही का है। आप ही काल के भी काल महाकाल तथा सभी प्रकार की कला तथा बल का विकरण करने वाले हैं, इसलिये आपको ही हे रुद्र ! सदा नमस्कार है। अत्रत् का सम्पूर्ण बल आप ही में अवस्थित है या संसार की सभी शक्तियों का प्रमथन आप ही के द्वारा हुआ करता है एवं समस्त प्राणियों के दमन (नवाने) तथा मनोन्मन (मानसिक विकास) की शक्ति आप ही के द्वारा प्राप्त हुआ करती है, अर्थात् प्राणी के उत्थान-अध:पतन का होना आप ही की कृपा पर अवलम्बित है। इसलिये हे सर्वशक्तिमान् शिव ! आपको सर्वदा नमस्कार है।

**अघोरेभ्योऽथ घोरेभ्यो घोरघोरतरेभ्यः। सर्वेभ्यः सर्वशर्वेभ्यो नमस्ते ऽअस्तु रुद्ररूपेभ्यः।। इति संयोजनम्।**

**तत्पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि। तन्नो रुद्रः प्रचोदयात् इति पिण्डीकरणम्।**

उग्र (भयंकर), उग्रतर तथा उग्रतम आदि विश्व के सभी के सभी रूप आपके रुद्ररूप से उत्पन्न हुए हैं, इसलिये सबके आदि कारण आपके रुद्ररूप को मेरा अनेकों बार नमस्कार है इस मन्त्र से मृत्तिका को साने।

उसी एकमात्र पुरुष को सब कुछ जानकर देवों के देव महादेव में अपनी बुद्धि अवस्थित कर केवल भगवान् रुद्र को ही मैं प्रेरित करता हूँ। इस मन्त्र से मृत्तिका को पिण्डीकरण (गोला) करे। अब नीचे लिखे मन्त्र को पढ़कर सुन्दर, शिवलिंग का निर्माण करे।

**ईशानः सर्वविद्यानामीश्वरः सर्वभूतानाम्। ब्रह्माऽधिपतिर्ब्रह्मणोऽधिपतिर्ब्रह्मा शिवो मे अस्तु सदाशिवोम्।**

विश्व के सभी विद्याओं के स्वामी तथा चराचर सभी जीवों के एक मात्र अधीश्वर तथा ब्रह्मादि देवताओं के प्रभु तथा उनके एकमात्र आराध्य दैवत् पूर्ण ब्रह्म रूप आप ही हैं, इसलिए सदा (सर्वदा) मेरा (शिव) कल्याण करते रहें। शिवलिंग बनाकर बायें हाथ, वेदी, ताँबे के बर्तन अथवा बिल्व पत्र पर ही अक्षत पुष्पयुक्त शिवलिंग की स्थापना इस मन्त्र से करें—

**ॐ ह्रौं ह्रीं जूं सः शूलपाणये नमः। इति स्थापनम्।**

लिंग की स्थापना करने के पश्चात् अधोलिखित संकल्प करे।

**ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुरित्यादि देशकालादिकं स्मृत्वा, अमुकगोत्रोऽमुकशर्माहं शुभपुण्यफलप्राप्तिकामनया पुरुषार्थचतुष्टयप्राप्त्यर्थं सर्वारिष्टशान्त्यर्थं तथा च सदाशिवप्रीत्यर्थे पार्थिवपूजनमहं करिष्ये।**

**ॐ ह्रौं ह्रीं जूं सः पिनाकपाणये नमः।**

इसके बाद '**ॐ ह्रौं ह्रीं जूं सः पिनाकपाणये नमः**' इस मन्त्र का उच्चारण करते हुए अधोलिखित श्लोकों द्वारा आवाहन (स्थापन) करे।

**कैलासशिखराद्रम्यात्समागच्छ मम प्रभो। पूजां जपं गृहीत्वा च यथोक्तफलदो भव।। देवदेवं महादेवं सर्वलोकहितेरतम्। यथोक्तरूपणिं देवं शम्भुमावाहयाम्यहम्। सदाशिवेह स्थितो भव।**

हे प्रभो ! अति रमणीक कैलास शिखर से शीघ्र यहाँ पधार कर मेरे द्वारा किये हुए जप तथा पूजा को स्वीकार करके अभीष्ट फलों की संसिद्धि के लिए वर देने का अनुग्रह करो। हे देवों के देव महादेव ! सम्पूर्ण जीव मात्र के कल्याण में सदैव तल्लीन रहने वाले भगवान् शंकर के तथाकथित स्वरूप का मैं हृदय से आवाहन करता हूँ इसलिए यहाँ पधार कर यहीं निवास कीजिए।

आवाहन करने के पश्चात् प्राणप्रतिष्ठापन के लिए हाथ में जल लेकर अधोलिखित मन्त्र से विनियोग करे।

**प्राणप्रतिष्ठा-मन्त्रस्य ब्रह्मविष्णुरुद्राऋषयः ऋग्यजुः सामच्छन्दांसि**

**प्राणाख्यदेवता, ॐ बीजम्, ह्रीं शक्तिः, क्रौं कीलकं पार्थिवलिङ्गप्राणप्रतिष्ठापनार्थे जपे विनियोगः।**

प्राण-प्रतिष्ठा मन्त्र के ब्रह्मा, विष्णु, रुद्र ये तीन ऋषि तथा ऋग्वेद, यजुर्वेद एवं सामवेद ये तीन ही छन्द हैं, उसका ॐ बीज, ह्रीं शक्ति एवं क्रौं कीलक है, ऐसे महामन्त्र को पार्थिव लिंग के प्राणप्रतिष्ठापन के लिए विनियोजित करता हूँ।

**ॐ आं ह्रीं क्रौं यं रं लं वं शं षं सं हं हंसः शिवस्य प्राणाः शिवस्य जीवाः शिवस्य सर्वेन्द्रियाणि इहागत्य सुखेन चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा, शिव इहागच्छेह तिष्ठ मम पूजां गृहाण।**

अब हाथ में अक्षत लेकर नीचे लिखे मन्त्र को कहते हुए पार्थिव लिंग के पर छिड़कता रहे। **'ॐ आं ह्रीं क्रौं यं रं लं वं शं षं सं हं हंसः।'**

इन ग्यारह बीज मन्त्रों की शक्ति से शिव का जीव, शिव का प्राण तथा शिव की समस्त ज्ञान-इन्द्रियाँ व कर्मेन्द्रियाँ इस पार्थिव लिंग में प्रविष्ट होकर सुखपूर्वक चिरकाल तक अधिष्ठित (अधिवासित) रहें। हे शिव ! यहाँ आकर तथा इस लिंग में निवास कर मेरी पूजा ग्रहण करो। फिर हाथ में पुष्प लेकर इस मन्त्र से प्राण संस्थापन करे।

**अस्मिन् सर्वजगन्नाथ यावत्पूजां करोम्यहम्।**
**तावत्त्वं प्रीतिभावेन लिङ्गेऽस्मिन् संस्थितिं कुरु।।**

हे जगत् के स्वामी सदाशिव, जब तक मैं आपका पूजन करता हूँ, तब तक अतीव प्रेम से इस पार्थिव लिंग में ही आप निवास करो। इसके बाद हाथ में अक्षत, फूल ग्रहण कर एकाग्र चित्त से भगवान् रुद्र का इस तरह ध्यान करे।

**ध्यायेन्नित्यं महेशं रजतगिरिनिभं चारुचन्द्रावतंसं**
**रत्नाकल्पो-ज्ज्वलाङ्गं परशुमृगवराभीतिहस्तं प्रसन्नम्।**
**पद्मासीनं समन्तात्स्तुतममरगणैर्व्यालयज्ञोपवीतं**
**विश्वाद्यं विश्ववन्द्यं निखिलभयहरं पञ्चवक्त्रं त्रिनेत्रम्।**

चाँदी के पहाड़ की कान्ति के सदृश सुन्दर देह धारण करने के साथ ही जिसने अपने मस्तक पर अतिरम्य चन्द्रखण्ड को भी धारण किये हैं एवं जिसका समस्त शरीर रत्नादिकों की कान्ति से प्रज्वलित हो रहे हैं तथा जिसने फरसा, मृग, वरद व अभय सुन्दर मुद्रा से पद्मासीन होकर चतुर्दिक देववृन्दों द्वारा प्रशंसित हो रहे हैं ऐसे विश्व के आदि कारण तथा समस्त भयों से दूर करने वाले, तीन नेत्रधारी, पाँच मुख वाले सदाशिवा अकाण्ड ब्रह्माण्ड द्वारा अहर्निश वन्द्य हो रहे हैं ऐसे

माहेश्वर रूप का शुद्ध हृदय से मैं ध्यान करता हूँ। तत्पश्चात् पार्थिवलिंग का पूजन अधोलिखित मन्त्रों से करे।

**ॐ शिवाय नमः, इति पाद्यं समर्पयामि।**

इस मन्त्र से पादप्रक्षालनार्थ जल समर्पित करता हूँ।

**ॐ महेश्वराय नमः, अर्घ्यं समर्पयामि।**

इस मन्त्र से अर्घ्य समर्पित करता हूँ।

**ॐ शम्भवेः नमः, अर्घ्यान्ते आचमनीयं समर्पयामि।**

इस मन्त्र से अर्घ्योपरान्त आचमन के लिए जल समर्पित करता हूँ।

अब आगे लिखे मन्त्र के द्वारा पञ्चामृत स्नान करावे।

**पञ्चामृतं मयानीतं पयो दधि घृतां मधु।**
**शर्करा च समायुक्तं स्नानार्थे प्रतिगृह्यताम्।।**

मेरे द्वारा पञ्चामृत (दूध, दही, घी, मधु, शर्करा) स्नान के निमित्त लाया गया है, हे हर ! इसे ग्रहण करें।

**ॐ नमः शम्भवाय च मयोभवाय च नमः शङ्कराय च मयस्कराय च नमः शिवाय च शिवतराय च।। इति शुद्धोदकस्नानम्।**

शम्भु तथा मयोभव ऐसे अमोघ कल्याणकारी शिवपदों में मेरा नमस्कार है। तत्पश्चात् नीचे लिखे मन्त्रों द्वारा वस्त्र, यज्ञोपवीतादि को समर्पित करे।

**१-ॐ ज्येष्ठाय नमः वस्त्रं समर्पयामि।**
**२-ॐ श्रेष्ठाय नमः, यज्ञोपवीतं समर्पयामि।**
**३-ॐ कपर्दिने नमः, पुनराचमनीयम्।**
**४-ॐ कालाय नमः, गन्धं समर्पयामि।**
**५-ॐ कलविकरणाय नमः, अक्षतान् समर्पयामि।**
**६-ॐ बलविकरणाय नमः, विल्वपत्र-धत्तूरादि-पुष्पाणि समर्पयामि।**
**७-ॐ बलाय नमः, धूपमाघ्रापयामि।**
**८-ॐ बलप्रमथनाय नमः, दीपं दर्शयामि।**
**९-ॐ नीलकण्ठाय नमः, नैवेद्यं निवेदयामि।**
**१०-ॐ भवाय नमः, ऋतुकालोद्भूतफलानि समर्पयामि।**
**११-ॐ मनोन्मनाय नमः, आचमनं समर्पयामि।**
**१२-ॐ शम्भवे नमः, ताम्बूलं समर्पयामि।**
**१३-ॐ त्रिलोकेशाय नमः, अभिषेकं समर्पयामि।**
**१४-ॐ शितिकठाय नमः, नीराजनं समर्पयामि।**

**१५–ॐ शिवप्रियाय नमः, षाड्गुण्यार्थे द्रव्य-दक्षिणा समर्पयामि।**

**१६–ॐ शम्भवे नमः, अन्ते नमस्करोमि।**

पूजन करने के पश्चात् पुष्पाञ्जलि समर्पण करे।

**हर विश्वाऽखिलाधार निराधार निराश्रय।**
**पुष्पाञ्जलिमिमां शम्भो गृहाण वरदो भव।।**
**ॐ पार्थिवेश्वराय नमः, पुष्पाञ्जलिं समर्पयामि।**

अखिल विश्व के आधार आप ही हैं, किन्तु स्वयं बिना किसी आधार तथा आश्रय के सर्वत्र व्याप्त हो इसलिये हे हर ! पुष्पांजलि ग्रहण कर वरदान दीजिये। **'ॐ पार्थिवेश्वराय नमः'** इस मन्त्र से पुष्पांजलि पार्थिवलिंग के ऊपर चढ़ावे।

**प्रार्थना**

**रूपं देहि जयं देहि भाग्यं देहि महेश्वर।**
**पुत्रान्देहि धनं देहि सर्वान्कामांश्च देहित मे।।**

हे माहेश्वर ! रूप, विजय, सौभाग्य, पुत्र, पौत्र, धन, धान्यादि सभी इच्छाओं को सफलीभूत करते रहो ऐसी प्रार्थना शम्भु शिव से हाथ जोड़कर विनय भाव से करने के पश्चात् यथाशक्ति अधोलिखित मूल मन्त्र का जप करे।

**ॐ नमः शिवाय।** अथवा **ॐ ह्रौं ह्रीं जूं सः शिवाय नमः, प्रपन्नपारिजाताय स्वाहा। इदं मूलमन्त्रमष्टोत्तरशतं सहस्रमधिकं जपेत्।**

उपरोक्त किसी एक महामन्त्र को कम-से-कम १०८ बार जप कर दे।

**गुह्यातिगुह्यगोप्यत्वं गृहाणाऽस्मत्कृतं जपम्।**
**सिद्धिर्भवतु मे देव ! त्वत्प्रसादान्महेश्वर।।**

आप गुप्त से गुप्त परम गोपनीय हैं। मेरे द्वारा किये जप को अंगीकृत करें। हे महेश्वर ! आपकी कृपा से मेरे सभी अभीष्ट सिद्ध हो जायें।

**अथ शिवलिङ्गस्याष्टदिक् आवरणपूजाप्रकारः–**

**ॐ शर्वाय क्षितिमूर्तये नमः, पूर्वस्याम्।**
**ॐ भवाय जलमूर्तये नमः, ईशान्याम्।**
**ॐ रुद्राय तेजोमूर्तये नमः, उत्तरस्याम्।**
**ॐ भीमाय आकाशमूर्तये नमः, पश्चिमायाम्।**
**ॐ पशुपतये यजमानमूर्तये नमः, नैर्ऋत्याम्।**
**ॐ महादेवाय सोममूर्तये नमः, दक्षिणस्याम्।**
**ॐ ईशानाय सूर्यमूर्तये नमः, आग्नेय्याम्।**
**ॐ नमः ओङ्काररूपाय वेदरूपाय ते नमः।।**

अलिङ्गलिङ्गरूपाय विश्वरूपाय ते नमः।
नमो मोक्षपदे नित्यं तुभ्यं नादात्मने तथा।
नमः शब्दस्वरूपाय रूपातीताय ते नमः।।
त्वं त्राता सर्वलोकानां त्वमेव जगेतां पिता।
त्वं भ्राता त्वं सुहृन्मित्रं त्वं प्रियः प्रियरूपधृक्।।
त्वं गुरुस्त्वं गतिः साक्षात् त्वं देवं च पितामहः।
नमस्ते भगवन् रुद्र भास्करामिततेजसे।।
संसारसागरे मग्नं मामुद्धर शिवाऽव्यय।
अनेन पूजनेन त्वं वाञ्छितार्थप्रदो भव।।
दण्डवत्प्रणतो भूत्वा स्तुत्वा चैव विशेषतः।
एकाग्रः प्रणतो भूत्वा मन्त्रमेतदुदीरयेत्।।
अङ्गहीनं क्रियाहीनं विधिहीनं महेश्वर।
पूजितोऽसि महादेव तत्क्षमस्वाऽम्बिकापते।।
अन्यथासक्तचित्तेन क्रियाहीनेन वा प्रभो।
मनोवाक्कायदुष्टेन पूजितोऽसि त्रिलोचन।।
तत्सर्वं क्षम्यतां देव दासे कृत्वा दयां मयि।
शरणागत-दीनार्त-परित्राण-परायण ।।

इति प्रार्थनां कृत्वा रुद्रीभिः ऋग्यजुःसामाऽथर्वभिश्च स्तोत्रैः स्तुत्वा यथाशक्ति-पञ्चाक्षरमन्त्रस्य जपं कुर्यात्।

### शिवलिंग का अभिषिञ्चन मन्त्र

ॐ देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम्। अश्विनोर्भैषज्येन तेजसे ब्रह्मवर्चसामभिषिञ्चामि।

उपरोक्त मन्त्र द्वारा शिवलिंग को अभिसिक्त करें। तदुपरान्त तिलक धारण कर अधोलिखित मन्त्र से शिवलिंग की परिक्रमा करें।

वृषश्चण्डं वृषश्चैव सोमसूत्रं पुनर्वृषम्।
चण्डश्च सोमसूत्रश्च पुनश्चण्डं पुनर्वृषम्।।
यानि कानि च पापानि जन्मान्तरकृतानि च।
तानि तानि विनश्यन्ति प्रदक्षिण पदे पदे।।

इन श्लोकों के द्वारा क्षमा-याचना करें।

मन्त्रहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं महेश्वर।
यत्पूजितं मया देव परिपूर्णं तदस्तु मे।।

**आवाहनं न जानामि न जानामि विसर्जनम्।**
**पूजनं नैव जानामि तत्क्षमस्व सदा हर।।**

बिना मन्त्र, बिना क्रिया व बिना भक्तिभाव के हे महेश्वर ! जो कुछ पूजा मैंने आपकी की है उसे दया कर हे मेरे देव ! पूर्ण संगता प्रदान करो।

इसके साथ ही आवाहन, पूजन, विसर्जन आदि मैं कुछ भी नहीं जानता इसलिये हे हर ! उसे कृपा कर क्षमा करें। इसके उपरान्त हाथ में फूल लेकर शिवलिंग का इन श्लोकों से विसर्जन करे।

**उग्रो महेश्वरश्चैव शूलपाणिः पिनाकधृक्।**
**शिवः पशुपतिश्चैव महादेव विसर्जनम्।।**
**ईशानः सर्वविद्यानामोङ्कारो भुवनेश्वर।**
**कैलासं गच्छ देवेश पुनरागमनाय च।।**

**अनेन पार्थिववेश्वरपूजनेन श्रीसदाशिवो देवता प्रसन्नोऽस्तु।**

## शिवताण्डवस्तोत्रम्

।।श्रीगणेशाय नमः।।

जटाकटाहसम्भ्रमभ्रमन्निलिंपनिर्झरी विलोलवीचिवल्लरीविराजमानमूर्धनि।
धगद्धगद्धगज्ज्वलल्ललाट पट्टपावके किशोरचन्द्रशेखरे रतिः प्रतिक्षणं मम।।
धराधरेन्द्रनन्दिनीविलासबन्धुबन्धुर स्फुरद्दिगन्तसन्ततिप्रमोदमानमानसे।
कृपाकटाक्षधोरणीनिरुद्धदुर्द्धरापदि क्वचिच्चिदम्बरेमनो विनोदमेतु वस्तुनि।।
जटाभुजङ्गपिङ्गलस्फुरत्फणामणिप्रभा कदम्बकुंकुमद्रवप्रलिप्तदिग्वधूमुखे।
मदान्धसिन्धुरस्फुरत्त्वगुत्तरीयमेदुरे मनो विनोदमद्भुतं बिभर्तु भूतभर्तरि।।
सहस्रलोचनप्रभृत्यशेषलेखशेखर प्रसूनधूलिधोरणीविधूसरांघ्रिपीठभूः।
भुजङ्गराजमालया निबद्धजाटजूटकः श्रियै चिराय जायतां चकोरबन्धुशेखरः।।
ललाटचत्वरज्वलद्धनञ्जयस्फुलिङ्गभा निपीतपञ्चसायकं नमन्निलिम्पनायकम्।
सुधामयूखलेखया विराजमानशेखरं महाकपालिसम्पदे शिरो जटालमस्तु नः।।
करालभालपट्टिकाधगद्धगद्धगज्ज्वल द्धनञ्जयाधरीकृतप्रचण्डपञ्चसायके।
धराधरेन्द्रनन्दिनीकुचाग्रचित्रपत्रक प्रकल्पनैकशिल्पिनि त्रिलोचने मतिर्मम।।
नवीनमेघमण्डलीनिरुद्धदुर्धरस्फुरत्कुहू निशीथिनीतमः प्रबन्धबन्धुकन्धरः।
निलिम्पनिर्झरीधरस्तनोतु कृत्तिसिन्धुरः कलानिधानबन्धुरः श्रियं जगद्धुरन्धरः।।
प्रफुल्लनीलपङ्कजप्रपञ्चकालिमच्छटा विडम्बिकण्ठकन्धरा रुचिप्रबन्धकन्धरम्।
स्मरच्छिदं पुरच्छिदं भवच्छिदं मखच्छिदं गजच्छिदान्धकच्छिदं तमन्तकच्छिदं भजे।।

अगर्वसर्वमङ्गलाकलाकदम्बमञ्जरी रसप्रवाहमाधुरीविजृम्भणामधुव्रतम्।
स्मरान्तकं पुरान्तकं भवान्तकं मखान्तकं गजान्तकान्धकान्तकं तमंतकान्तकं भजे।।
जयत्वदभ्रविभ्रमभ्रमद्भुजङ्गमस्फुर द्धगद्धगद्विनिर्गमत्करालभालहव्यवाट्।
धिमिद्धिमिद्धिमिध्वनन्मृदङ्गतुङ्गमङ्गल ध्वनिक्रमप्रवर्तितप्रचण्डताण्डवः शिवः।।
दृषद्विचित्रतल्पयोर्भुजङ्गमौक्तिकस्त्रजोर्गरिष्ठ रत्नलोष्ठयोः सुहृद्विपक्षपक्षयोः।
तृणारविन्दचक्षुषोः प्रजामही महेन्द्रयोः समं प्रवर्तयन्मनः कदा सदाशिवं भजे।।
कदा निलिंपनिर्झरीनिकुञ्जकोटरे वस न्विमुक्तदुर्मतिः सदा शिरःस्थमज्जलिं वहन्।
विमुक्तलोललोचनाललामभाललग्नकः शिवेति मन्त्रमुच्चरन् कदा सुखी भवाम्यहम्।।
इमं हि नित्यमेवमुक्तमुत्तमोत्तमं स्तवं पठन्स्मरन्ब्रुवन्नरो विशुद्धिमेति सन्ततम्।
हरे गुरौ स भक्तिमाशु याति नान्यथा गतिं विमोहनं हि देहिनां तु शङ्करस्य चिन्तनम्।।
पूजावसानसमये दशवक्त्रगीतं यः शम्भुपूजनमिदं पठति प्रदोषे।
तस्य स्थिरां रथगजेन्द्रतुरङ्गयुक्तां लक्ष्मीं सदैव सुमुखीं प्रददाति शम्भुः।।

।।इति श्रीरावणविरचितं शिवताण्डवस्तोत्रं।।

## शिवपञ्चाक्षरस्तोत्रम्

।।श्रीगणेशाय नमः।।

नागेंद्रहाराय त्रिलोचनाय भस्मांगरागाय महेश्वराय।
नित्याय शुद्धाय दिगंबराय तस्मै नकाराय नमः शिवाय।।
मंदाकिनीसलिलचंदनचर्चिताय नंदीश्वरप्रमथनाथमहेश्वराय।
मन्दारपुष्पबहुपुष्पसुपूजिताय तस्मै मकाराय नमः शिवाय।।
शिवाय गौरीवदनाब्जवृन्द सूर्याय दक्षाध्वरनाशकाय।
श्रीनीलकंठाय वृषध्वजाय तस्मै शिकाराय नमः शिवाय।।
वासिष्ठकुम्भोद्भवगौतमार्यमुनींद्रदेवार्चितशेखराय।
चन्द्रार्कवैश्वानरलोचनाय तस्मै वकाराय नमः शिवाय।।
यक्षस्वरूपाय जटाधराय पिनाकहस्ताय सनातनाय।
दिव्याय देवाय दिगंबराय तस्मै यकाराय नमः शिवाय।।
पंचाक्षरमिदं पुण्यं यः पठेच्छिवसंनिधौ।
शिवलोकमवाप्नोति शिवेन सह मोदते।।

।।इति शिवपंचाक्षरस्तोत्रं।।

## शिवषडक्षरस्तोत्रम्

।।श्रीगेणशाय नमः।।

ॐकारं बिंदुसंयुक्तं नित्यं ध्यायंति योगिनः।
कामदं मोक्षदं चैव ओंकाराय नमो नमः।।

नमंति ऋषयो देवा नमंत्यप्सरसां गणाः।
नरा नमंति देवेशं नकाराय नमो नमः।।
महादेवं महात्मानं महाध्यानं परायणम्।
महापापहरं देवं मकाराय नमो नमः।।
शिवं शान्तं जगन्नाथं लोकानुग्रहकारकम्।
शिवमेकपदं नित्यं शिकाराय नमो नमः।।
वाहनं वृषभो यस्य वासुकिः कंठभूषणम्।
वामे शक्तिधरं देवं वकाराय नमो नमः।।
यत्र यत्र स्थितो देवः सर्वव्यापी महेश्वरः।
यो गुरुः सर्वदेवानां यकाराय नमो नमः।।
षडक्षरमिदं स्तोत्रं यःपठेच्छिवसंनिधौ।
शिवलोकमवाप्नोति शिवेन सह मोदते।।

।।इति शिवषडक्षरस्तोत्रं।।

### ॐकार का स्वरूप निरूपण

एक बार कैलास पर स्थित शिवजी ने मात पार्वती के प्रश्नों का उत्तर इस प्रकार देते हैं—हे देवी! जो तुम मुझसे पूछ रही हो, उसे मैं कहता हूँ। उसके सुनने मात्र से जीव साक्षात् शिव हो जाता है। प्रणव के अर्थ का वास्तविक ज्ञान ही मेरा ज्ञान है। वही मन्त्र सभी विद्याओं का बीज (मूल कारण) है। वह वट बीज की भाँति अतिसूक्ष्म है और महत्त्वपूर्ण अर्थ वाला है। वही वेदों का आदि है। वही वेदों का सार है तथा वही विशेषकर मेरा स्वरूप है।

मैं तीनों गुणों से परे रहने वाला सर्वज्ञ, सर्वकृत प्रभु हूँ। सर्वत्र गमन करने वाला होने पर भी ॐ इस एक अक्षर वाले मन्त्र में स्थित शिव हूँ। यह जो कुछ वस्तु है, वह सब गुण मेरे और प्रधान के संयोग से समष्टि (संक्षेप), व्यष्टि (विराट्) रूप से प्रणव का अर्थ ही है। इसलिये वह एक अक्षर ब्रह्म ही सभी अर्थों का साधक है।

इसलिये शिवजी ॐ से ही सम्पूर्ण संसार की रचना करते हैं। शिव या प्रणव, या शिव एक ही हैं; क्योंकि वाच्य और वाचक में कुछ भेद नहीं होता है। इसलिये मुझे ब्रह्मर्षि एकाक्षर देव कहते हैं, क्योंकि विद्वान् वाच्य-वाचक में एकता स्वीकार करते हैं। इसलिये प्रणव को ही सबका कारण जानो। मुमुक्षु (मोक्ष को चाहने वाले योगी) मुझे निर्विकारी, निर्गुण, परमेश्वर समझते हैं।

हे देवेशी! सभी मन्त्रों में श्रेष्ठ इस प्रणव को काशी में प्राणियों को मुक्ति देने

के लिये सुनता हूँ। हे अम्बिका! अब मैं पहले प्रणवोद्धार का वर्णन करता हूँ। जिसको जानने से परम सिद्धि प्राप्त होती है।

पहले अकार के आश्रित निवृत कला का उद्धार करे। उकार में इन्धन कला का, मकार में काल कला का, नाद में दण्ड और बिन्दु में ईश्वर कला का उद्धार करे।

इस प्रकार पाँच वर्ण रूप प्रणव का उद्धार होता है। यह तीन मात्रा तथा बिन्दु नादात्मा जपने वाले को मुक्ति प्रदान करता है। ब्रह्मा से लेकर स्थावर पर्यन्त सभी प्राणियों का यह प्राण है। अतएव इसे प्रणव कहते हैं। इसका आदिवर्ण अकार है, उकार, अन्त में मकार तथा नाद है। इसके संयोग से ॐ बनता है।

हे मुनिवर! यह जल की भाँति दक्षिण-उत्तर में स्थित है। मध्य में मकार है, इस प्रकार ॐकार की स्थिति है। अकार, उकार, मकार—एक क्रम से तीन मात्रा है। उसके बाद आधी मात्रा और है।

हे महेशानी! यह आधी मात्रा बिन्दु नाद स्वरूप वाली है। इसका वर्णन नहीं किया जा सकता। इसे ज्ञानी लोग जानते हैं। हे प्रिया! 'ईशानः सर्वविद्यानाम्' इस प्रकार वेद ने कहा है। ये वेद मुझसे उत्पन्न होते हैं, यह 'वेदों ने सत्य कहा है।

इसलिये मैं वेदों का आदि हूँ और प्रणव मेरा वाचक है। मेरा वाचक होने के कारण यह प्रणव भी वेदों का आदि कहा गया है। अकार इसका महान् बीज है। इसी के रजोगुण से ब्रह्मा जी की उत्पत्ति होती है।

उकार इसकी प्रकृति (योनि) है। सत्वगुण वाले हरि (विष्णु) पालयिता है। मकार पुरुष बीज है, तमोगुण युक्त हर (शिवजी) इसके संहारक हैं। इस प्रकार बिन्दु साक्षात् महेश्वर देव हैं, जो तीरोभाव के कर्ता कहे गये हैं। नाद सदाशिव कहे गये हैं, जो सब पर दया करते हैं। नादरूप पर से भी परशिव का ध्यान मस्तिष्क में करना चाहिए।

वे ही सर्वज्ञ, सर्वकर्ता, सर्वेश, निर्मल, अव्यय (अविनाशी), अनिदृश्य, परब्रह्म तथा सत्-असत् से परे हैं। अकार आदि सभी स्वरों तथा व्यञ्जनों में क्रम से उत्तरोत्तर अधिक व्याप्त है। ऊपर से निचला वर्ण अधिक व्याप्य है। ऐसा सर्वत्र विचार करे।

### पञ्चकलात्मक ॐकार

अकारादि पाँच वर्णों में सद्यस् से ईशान पर्यन्त जो पाँच ब्रह्म हैं, वे क्रम से मेरी ही मूर्तियाँ हैं। सद्यस् से उत्पन्न अकार रूप शिव में आठ कलायें हैं। उकार में वामदेव रूप से तेरह कलायें कही गयी हैं।

अघोर रूपीणि आठ कलायें मकार में स्थित हैं। बिन्दु में पुरुषों के देखने

योग्य चार कलायें हैं। नाद में ईशान रूप पाँच कलायें हैं। इन छः पदार्थों की एकता के अनुसन्धान से प्रणव की पंचात्मकता कही गयी है।

मन्त्र, यन्त्र, देवता, प्रपञ्च, गुरु, शिष्य—इन छः पदार्थों के अर्थों को हे प्रिया! तुम सुनो! पहले कहा गया है कि प्रणव मन्त्र पाँच वर्णों का समूह है, वही यन्त्र रूप धारण करता है।

अब उसके मण्डल का क्रम कहते हैं। यन्त्र देवता रूप हैं, देवता विश्व रूप हैं, गुरु विश्व रूप हैं और शिष्य गुरु का ही शरीर है। यह सब ॐकार रूप ही है और सब ब्रह्म ही हैं, वेद ऐसा कहता है।

वाच्य-वाचक सम्बन्ध से यही अर्थ निकलता है। आधार, मणिपूर, हृदय, विशुद्धि चक्र, आज्ञाचक्र, शक्ति, शान्ति इस क्रम से ये स्थान कहे हैं।

हे देवेशी! शान्ति से अतीत को ही परमात्मा कहते हैं। इसका अधिकारी वही है, जिसे दृढ वैराग्य हो। हे देवि! मैं ही इसका विषय हूँ, उपासक जीव-ब्रह्म की एक भावना करे। इसका विषय तो कह दिया है, अब इसका सम्बन्ध सुनो।

जीवात्मा और प्रणव को मेरे (परमब्रह्म के) साथ एकता होती है। वाच्य-वाचक (जीव-ब्रह्म) की एकता का बोधक प्रणव है, यही सम्बन्ध है।

### पतितोद्धारक ॐकार

रावण ने कहा—ब्राह्मण वध करने वाला, मद्य पीने वाला, चोरी करने वाला, गुरु स्त्री के साथ गमन करने वाला, माता, पिता, वीर अथवा भ्रूण को मारने वाला, विना मन्त्र के भक्ति से परम कारण शिव की पूजा करके उक्त सभी पापों से बारह वर्षों में क्रमशः मुक्त हो जाता है।

इसलिये सब प्रयत्नों से पतित भी भक्ति से शिवपूजन करे। भक्त ही मुक्त होता है, दूसरा नहीं। भले ही वह जितेन्द्रिय, भिक्षाहारी क्यों न हो। महापाप करने पर भी भक्ति से पंचाक्षर मन्त्र द्वारा यदि वह देवेश की पूजा करता है, तो पाप से मुक्त हो जाता है।

हवा तथा पानी का सेवन कर जो व्रत से शरीर को कृष कर देते हैं, वे इन व्रतों से शिवलोक नहीं पहुँचते। भक्तिपूर्वक पंचाक्षर मन्त्र से जो एक बार भी शिवपूजन करता है, वह भी शिवमन्त्र के प्रभाव से शिव स्थान को जाता है।

इसलिये सभी तप, यज्ञ, सर्वस्वदक्षिणा—ये शिवमूर्ति पूजन की करोड़वें अंश के बराबर भी नहीं है। बद्ध हो या मुक्त हो, पंचाक्षर मंत्र से पूजा करने वाला भक्त मुक्त हो जाता है। इसमें कोई संदेह नहीं है।

अरुद्र या सरुद्र सूक्त से जो शिवपूजन करता है वह मनुष्य मूर्ख हो या पतित हो, एक ही बार में मुक्त हो जाता है।

**शिवभक्ति महिमा**

षड्अक्षर मन्त्र से या सूक्त मन्त्र से जो भक्त क्रोध को जीतकर शिवपूजन करता है उसने यदि गुरु मन्त्र नहीं लिया है, तो भी वह गुरु मन्त्र लिये के समान है। हलाँकि इनमें गुरु मन्त्र प्राप्त व्यक्ति ही श्रेष्ठ है। वह ब्रह्माङ्ग के अथवा हंस के साथ मुक्त हो जाता है।

इसलिये प्रतिदिन भक्तिपूर्वक शिव का पूजन सूक्त मन्त्र से एक समय, दो समय या तीन समय अथवा प्रतिदिन करे। जो महादेव का पूजन करते हैं, उन्हें महेश्वर समझना चाहिए।

आत्म सहायक ज्ञान से जिन्होंने भगवान् शिव की पूजा नहीं की वह इस दुःख सागर संसार में घूमते रहते हैं। जो दुर्लभ मनुष्य जन्म पाकर शिव की पूजा नहीं करता, वह मोक्ष का अधिकारी नहीं होता।

अतः उसका जन्म व्यर्थ है। दुर्लभ मनुष्य जन्म पाकर जो शिवपूजन करते हैं, उन्हीं का जन्म सफल है। वे नरोत्तम कृतार्थ हैं, जो शिवभक्ति के लिये तत्पर हैं और सदाशिव को प्रणाम करते हैं।

जो सदा शिव स्मरण करते हैं, वे दुःख के भागी नहीं होते। उनके मनोहर भवन होते हैं तथा उनकी उत्तम आभूषणों वाली स्त्रियाँ होती हैं। शिव पूजन के फल से तृप्ति पर्यन्त धन मिलता है।

जो स्वर्ग के भोगों और वहाँ का राज्य चाहते हैं, वे सदा शिव के चरण कमल की भक्ति चाहते हैं। सौभाग्य, मनोहर रूप, सत्व, त्याग, दयालु स्वभाव, शूरता, संसार में प्रसिद्धि शिव पूजक को मिलती है।

अतः सब कुछ छोड़कर शिव में मन लगाये, जो अपना भला चाहे, वह नित्य शिव पूजन करे। यौवन तथा जीवन शीघ्र चला जाता है। शीघ्र रोग आता है। अतः शिव का पूजन करें। जब तक बुढ़ापा तथा मृत्यु नहीं आती, जब तक इन्द्रियों में विकलता नहीं आती, तब तक शिव पूजन करे।

तीनों लोकों में शिव पूजन से बढ़कर कोई दूसरा धर्म नहीं है। ऐसा जानकर प्रयत्न से सदा शिव की पूजा करनी चाहिए। द्वारयाग, बगीचा लगाना, बच्चों को भोजन कराना, घर में पूजन करने पर प्रतिदिन उत्सव करे।

हविष्य का निवेदन करने के बाद स्वयं या सेवक महल में रहने वाले परिजनों को प्रसाद बाँटे और बाजों के साथ शिव मन्दिर में जाय। जल, फूल, धूप, दीप चढ़ायें। महापीठ में उत्तर मुख करके बलिदान करे।

जो अन्न आदि शिव को अर्पित किया है उसका शेष अंश शिव के गढ़ चण्ड को अर्पित करें। विधिवत् हवन करके पूजा को समाप्त करे। इस प्रयोग को करके यथा सम्भव मंत्र का जप करे।

शिव शासन के अनुसार प्रतिदिन उत्सव करे। लाल कमल से शोभित बड़े धातुपात्र में दिव्य पशुपत अस्त्र को मिलाकर उसमें आवाहन करके उसकी पूजा करे। फिर उस पात्र को सुशोभित कर ब्राह्मण के सिर पर रखकर चमकती हुई लाठी धारण करने वाले, अस्त्रन्यासयुक्त शरीर से भवन के परिजनों के सामने मंगल ध्वनि तथा नाच गाना, दीप जलाना, ध्वजा फहराना आदि करें।

धैर्यपूर्वक तीन प्रदक्षिणा करे। महापीठ के चारों ओर तीन प्रदक्षिणा करके फिर यजमान हाथ जोड़कर द्वार पर स्थित होकर पूर्वोक्त आठ फूलों को भीतर ले जाकर अस्त्र का विसर्जन करे। पहले कहे गये क्रम से प्रदक्षिणा आदि करके आठ फूलों को लेकर पूजा को समाप्त करे।

## नाम मन्त्र का उपदेश

रावण ने कहा—अब मैं नाममन्त्र, शिवसाधक मन्त्र तथा संस्कार मन्त्र के माहात्म्य को कहता हूँ, जैसा मैंने पहले कहा था मण्डल में महादेव जी की पूजा कर, कलश स्थापना कर और हवन कर पगड़ी रहित शिष्य को वहाँ मण्डल में बैठाये।

पहले की भाँति सब विधान करके सौ आहुति देकर पूर्णाहुति होम करके कलश जल से मूल मन्त्र द्वारा उत्तम गुरु शिष्य का अभिषेक करके पहले की भाँति अग्नि प्रज्वलित कर, अभिषेक करके उसे उत्तम मन्त्र की दीक्षा दे।

उसमें विद्या की उपदेश पर्यन्त सब विस्तार से करके उस उपयुक्त जल से शिष्य के हाथ में शिव सम्बन्धी विद्या को समर्पित करे और उससे कहे—तुम्हारे इस लोक तथा परलोक में यह विद्या सभी प्रकार की सिद्धियों को देगी और यही शिवजी की कृपा से महामन्त्र होगा।

यह कहकर महादेव की पूजा करके गुरु शिव से आज्ञा पाकर साधन तथा शिवयोग का उपदेश साधक को करे। गुरु के इस सन्देश को सुनकर मन्त्र साधक विनियोग के साथ मन्त्र साधन करे। मूल मन्त्र के इस साधन को सामने करने के कारण इस विनियोग कर्म को पुरश्चरण कहते हैं।

मोक्ष की इच्छा करने वाले को अधिक मन्त्र साधन करना चाहिए। यदि करे तो उसे इस लोक तथा परलोक में सुख मिलता है।

अच्छे दिन, शुभ देश, दोषरहित कला में दाँतों, नाखूनों को साफ कर, स्नान करके प्रातःकृत्स करके गन्ध, माला, आभूषण आदि से अपने को अलंकृत

करके, सफेद पगड़ी, दुपट्टा को धारण कर, मन्दिर में, घर में या और किसी मनोहर स्थान में सुखपूर्वक आसन लगाकर शिवशास्त्र में कथित मार्ग में अपने शरीर को शिवमय करके नकुलीश्वर देव-देवेश की पूजा कर उन्हें खीर चढ़ाकर आराधना को समाप्त कर, महादेव जी को प्रणाम कर, उनसे आज्ञा पाकर करोड़ बार, उसके आधी, फिर उसके आधी बार शिव का बीस लाख या दस लाख जप करे।

फिर हिंसा रहित, क्षमायुक्त, शान्त तथा सदा दानी हो, खीर या नमक रहित अल्प भोजन करे। खीर के न मिलने पर फल मूल का भोजन करे। शिवजी ने इन पदार्थों को उत्तरोत्तर श्रेष्ठ कहा है। चरु, सत्तु या यावक का भोजन करे।

शाक, दूध, दही, घी, मूल, फल, जल इन भक्ष्य भोज्यों को मन्त्र से अभिमंत्रित करके इस साधन में विशेष करके मौन होकर भोजन करे आठ सौ मन्त्र पढ़कर नदी या नद पवित्र जल से व्रती स्नान या प्रोक्षण करे।

प्रतिदिन तर्पण करे। शिवाग्नि में सात, पाँच, तीन बार घी की आहुति देकर हवन करे।

इस प्रकार जो शैवसाधक भक्ति से शिव की पूजा करता है, उसे इस लोक, परलोक में कोई वस्तु दुर्लभ नहीं है। अथवा प्रतिदिन एकाग्र मन से मन्त्र जपे। हजार मन्त्र पढ़े बिना भोजन नहीं करे। तभी मन्त्र की सिद्धि होती है। उसके लिये कुछ भी दुर्लभ नहीं, कोई अशुभ नहीं।

इस लोक में विद्या, लक्ष्मी, सुख पाकर वह मुक्ति भी पाता है। नित्य, नैमित्तिक साधन तथा विनियोग में जल, मन्त्र तथा भस्म स्नान करे और मन्त्र का जप करे। पवित्र होकर शिखा बाँधकर हाथ में पवित्री लेकर त्रिपुण्ड्र लगाकर तथा रुद्राक्ष धारण कर पंचाक्षरी विद्या का जप करे।

## शिवलिङ्ग पूजार्थ विधान

रावण ने कहा—शिवशास्त्र में शिवजी ने विद्या से जो पूजा विधान कहा था, उसकी संक्षिप्त मैं व्याख्या करता हूँ। अग्नि कार्य के अन्त तक किये जाने वाले कार्य को अभ्यन्तर अंग कहते हैं। उसे करके वहिर्याग करे या न करे।

उसमें द्रव्यों को मन से विचार कर शुद्ध कर विधिपूर्वक गणेश का ध्यान कर उनका पूजन करे। दक्षिण में नन्दीश उत्तर में सुयश की आराधना कर विद्वान् मन से आसन की कल्पना करे, आराधना आदि से युक्त होकर सिंहयोग, पद्मासन तथा निर्मल आदि आसन में बैठे, जो तीनों तत्त्वों से विराजमान् हो उसके ऊपर साम्बशिव का ध्यान करे।

जो सभी अवयवों से सुन्दर, सबके मन को हरने वाले तथा सभी लक्षणों

से युक्त हैं। सबसे श्रेष्ठ, सभी आभूषणों से सुशोभित, लाल मुख, हाथ, पैर वाले, कुन्द चन्द्र के सदृश मन्द हास्य युक्त सुख वाले, शुद्ध स्फटिक के समान वर्ण वाले, खिले कमल के सदृश नेत्रों वाले, चार भुजाओं, उदार अंगों से विभूषित, सुन्दर चन्द्र कला को धारण करने वाले, वरदायक अभय हाथ वाले, भृगटंक को धारण करने वाले, साँपों की माला तथा कंकण को धारण करने वाले, नीलकण्ठ को शिव को सभी उपमाओं से रहित, सेवक कुटुम्ब सहित, जिनके वाम भाग में महेश्वरी हैं, उनका ध्यान करे।

खिले हुये कमल के समान कान्ति युक्त, बड़े चौड़े नेत्रों वाली, पूर्ण चन्द्र के सदृश जिनके मुख की कान्ति है, काले घुँघराले बालों वाली, नीलकमल दल के समान वर्ण वाली, अर्धचन्द्र जिनके मुकुट में हैं, गोल, घने, ऊँचे स्निग्ध तथा पुष्ट स्तनों वाली, कृषोदरी, विपुल नितम्बा, पीले तथा सूक्ष्म वस्त्र को धारण की हुयी, सभी आभूषणों से भूषित, मस्तक के तिलक से उज्ज्वल, जूड़े में लगाये हुये फूलों से सुशोभित, समस्त गुणों से युक्त, लज्जा से कुछ झुके हुये मुख वाली, स्वर्ण कमल को हाथ में धारण की हुयी, दूसरे हाथ दण्ड की भाँति रखकर महासन में बैठी हुयी संसार बन्धन को काटने वाली साक्षात् सच्चिदानन्द वाली को शतशत नमन है।

इस प्रकार शुभ आसन पर बैठे हुये शिव-शिवा का ध्यान करे और सभी उपचारों से भक्ति के साथ उन्हें भाव पुष्प अर्पित करे अथवा विभु की दूसरी मूर्त्ति बनाकर सदा शिव नामक माहेश्वरी मूर्ति की कल्पना करे अथवा षड्विंशक नामक या श्रीकण्ठ नामक मूर्त्ति की कल्पना करे।

अपने शरीर में मन्त्र न्यास आदि रूप मूर्तिमान् शिव को जो सत् असत् से परे हैं उन्हें बाहरी क्रम से ध्यान कर बुद्धिपूर्वक उनकी पूजा करे।

फिर समिधा तथा घी आदि से नाभि में होम करे। दोनों भौं के बीच में शुद्ध दीप की लौ के सदृश शिव का ध्यान करे।

इस प्रकार अपने शरीर में स्वतन्त्र रूप में, ध्यानमय योग में, उनका ध्यान करें। हवन पर्यन्त सर्वत्र समान ही विधि है। इस चिन्तामय आराधन क्रम को समाप्त कर लिङ्ग में, स्थण्डिल में अथवा अग्नि में देव की पूजा करे।

रावण ने कहा—शुद्धि के लिये पूजा स्थान का मूल मन्त्र से प्रोक्षण करे तथा उसमें गन्ध, चन्दन, पुष्प और जल डालें। अस्त्र से विघ्नों को हटाकर, कवच से ढककर फिर उस अस्त्र को दिशाओं में रखकर पूजा स्थान की कल्पना करे।

प्रोक्षण आदि से उस भूमि को शुद्ध कर वहाँ कुश बिछा दे। सभी पात्रों को

शुद्ध कर द्रव्यों को भी शुद्ध करे। प्रोक्षणी, अर्घ्यपात्र, पाद्यपात्र तथा आचमनी—इन चार पात्रों को धोकर, पोछकर, देखकर उनमें शुद्ध जल डाले।

जो प्राप्त हो वे सभी पवित्र द्रव्य उनमें डाले। रत्न, चाँदी, सोना, गन्ध, पुष्प, अक्षत, फल, पंचपल्लव, कुश तथा अनेक बार पूर्ण द्रव्य को डाले। स्नान तथा पीने के जल में विशेषकर सुगन्धित द्रव्य डाले। और शीतल, मनोहर फूल आदि भी डाले।

पाद्य जल में खस, चन्दन डाले। जायफल, कंकोल, कपूर, केवड़ा, तमाल इन्हें चूर्ण कर आचमन के योग्य जल में डाले। इलायची, कपूर तथा चन्दन सभी जलपात्रों में डाले। कुश के अग्र भाग, अक्षत, जौ, धान, तिल, घी, सरसों, फूल, भस्म—इन्हें अर्घ्यपात्र में डाले।

कुश, फूल, जौ, धान, केवड़ा, तमाल—इन्हें तथा भस्म को प्रोक्षणी पात्र में डाले। सर्वत्र मन्त्र न्यास कर बाहर से वर्म, कवच से लपेट कर फिर अस्त्र से सुरक्षित कर धेनु मुद्रा का प्रदर्शन करे।

सभी पूजा द्रव्यों का प्रोक्षणी पात्र के जल से प्रोक्षण कर के फिर मूल मन्त्र से उनका विधिवत् शोधन करे। पात्रों के न मिलने पर सभी कर्मों में एक प्रोक्षणी से उत्तम साधक सामान्य अर्घ्य दे। फिर विनायक देव को भक्ष्य भोज्य आदि द्वारा क्रम से पूजा विधि के अनुसार द्वार के दक्षिण में पूजे। फिर अन्त:पुर के स्वामी सुवर्णपर्वत की भाँति समस्त आभूषणों से युक्त नन्दीश्वर की भली-भाँति पूजा करे।

जो बालचन्द्र को मुकुट में धारण किये हैं। सौम्य, त्रिनेत्र, चतुर्भुज, दीप्त त्रिशूल, मृगीटंक तथा तेजस्वी नेत्रों वाले प्रभु हैं। चन्द्र मण्डल के समान मुख, हरिवस्त्र, उत्तर द्वार के समीप मरुत की कन्या सुयशा, जो पार्वती जी के पाद युगल को दबाने में लगी हैं, की पूजा करके परमेष्ठी के भवन में प्रवेश करे।

उक्त द्रव्यों से लिङ्ग पूजा करके निर्माल्य को हटाकर फूल को धोकर उसकी शुद्धि के लिये सिर पर रखे। हाथ में फूल लेकर शिष्य की शुद्धि के लिये यथाशक्ति मन्त्र का जप करे। ईशान में चण्ड देव की आराधना कर निर्माल्य से हिला दे। फिर आराधना आदि क्रम से वहाँ आसन रखे।

आधार शक्ति, कल्याणी तथा श्यामा का भूमि में ध्यान करे। उसके आगे फन उठाये हुये पाँच फणों युक्त सफेद वर्ण के कुण्डलाकार बैठे अनन्त को, जो मानों आकाश को चाट रहा हो उसके ऊपर भद्रासन, सिंह के सदृश चार पैरों वाले धर्म, ज्ञान, वैराग्य, ऐश्वर्य तथा पद इनकों आग्नेय आदि कोणों में सफेद, लाल, पीला, श्याम—इन वर्णों से और अधर्म आदि पूर्व से उत्तर तक क्रम से इनके शरीरावयवों से राजावर्तमणि के रूप में ध्यान करे।

इनके ऊपर आच्छादन के रूप में निर्मल पद्मासन की भावना करे। उस कमल के आठ पत्र अणिमा आदि आठ गुणों वाले हैं। वाम आदि शक्तियाँ उसके केशर हैं। रुद्र वाम आदि शक्तियों से युक्त हैं। वे मनोन्मनी आदि शक्तियाँ ही बीज कही गयी है। ऊपर कर्णिका वैराग्य है, शिवात्मक ज्ञान ही उसकी नाल है।

शिव धर्मात्म रूपी उसका कन्ध है। कर्णिका के अन्त में तीन मण्डल है और उनके ऊपर तत्त्व आदि तीन आसन हैं। सब आसनों के ऊपर एक सुखद विचित्र आसन बिछा हुआ है। वहाँ एक शुद्ध विद्या के दिव्य आसन की कल्पना करे। आवाहन, स्थापन, चित्तवृत्ति का विरोध, निरीक्षण कर फिर अलग-अलग मुद्राओं द्वारा नमस्कार करे।

पाद्य, आचमन, अर्घ्य, गन्ध, पुष्प, धूप आदि ताम्बूल अर्पित कर शिव शिवा को शयन कराये। अथवा मूर्त्ति एवं आसन की कल्पना करके मूल मन्त्र, ब्रह्ममन्त्र तथा वेद मन्त्र से पूर्ण कर परम कारण शिव जी का देवी के साथ आवाहन करे।

जो शुद्ध स्फटिक के सदृश निश्चल तथा अक्षर देव हैं। जो सब लोकों के कारण हैं, सर्व लोकमय हैं, बाहर-भीतर व्याप्त होकर जो छोटे से छोटे और बड़े से भी बड़े हैं, जो अव्यय, ईश्वर बिना प्रयत्न के ही भक्तों को दर्शन देते हैं और जिन्हें ब्रह्मा, विष्णु, इन्द्र, रुद्र आदि देवता भी नहीं देख सकते। जो वेदसार हैं, विद्वानों ने जिन्हें वे अगोचर हैं--ऐसा सुना है, जो आदि, मध्य,अन्त रहित हैं और भवबन्धन रूप रोग की जो परम औषध हैं, जिन्हें शिवतत्त्व कहते हैं। जो संसार का कल्याण करने के लिये स्थिर हैं, ऐसे शिवलिङ्ग का पूजन पंचोपचार की भाँति भक्ति से करे।

परमात्मा महेश शिव की लिङ्गमूर्त्ति को स्नान कराते समय मांगलिक जय शब्द का उच्चारण करे। पंचगव्य भी दूध, दही, मधु तथा चीनी आदि फल, फलों के सार, तिल, सरसों तथा सत्तूओं से जौ आदि बीजों से, उड़द के चूर्ण से उबटन लगाकर, गरम जल से स्नान कराये।

लेप तथा गन्ध द्रव्यों को छुड़ाने के लिये बिल्व पत्र आदि से रगड़े। फिर चक्रवती उपचार पूर्वक जल से स्नान कराये। सुगन्धि युक्त आँवलों तथा हल्दी से पोतकर जल से लिङ्ग बेर को शुद्ध करे। सुगन्धित जल से, कुश तथा फूल मिश्रित जल से, सोना तथा रत्नयुक्त जल से तथा मन्त्रपूत जल से क्रमशः स्नान कराये।

उक्त द्रव्यों के न होने पर जो उपलब्ध हो अथवा मन्त्रपूत जल से श्रद्धापूर्वक शिव को स्नान कराये। कलश से, शंख से, वर्धनी से, हाथ से, कुश तथा पुष्प से मन्त्रपूर्वक शिव को स्नान कराये। पवमान, रुद्र, नीलरुद्र त्वरित मन्त्र लिङ्गसूक्त आदि

सूक्तों से, अथर्वशीर्ष, ऋग्वेद, सामवेद के मन्त्रों से, पंचब्रह्म मन्त्र से तथा ओंकार से देव देवेश शिव को स्नान कराये।

शिव शिवा के स्नान में कोई विशेष भेद नहीं है, क्योंकि वे दोनों समान हैं। पहले महादेव को स्नान कराये, बाद में महादेवी को; यह देवदेव की आज्ञा है। अर्धनारीश्वर दोनों ही पूज्य हैं उनके पूजन में आगे पीछे का विचार नहीं है।

अन्यत्र कहीं-कहीं शिव शिवा के पूजा का विचार है। लिङ्ग का अभिषेक करके पवित्र सुगन्धित वस्त्र से उसे पोछे। फिर वस्त्र तथा यज्ञोपवीत चढ़ायें। पाद्य, आचमन, अर्घ्य, गन्ध, पुष्प, भूषण, धूप-दीप, नैवेद्य मुख शुद्ध करने के लिये जल दे। फिर आचमनी, मुखवास, ताम्बूल, सभी रत्नों से जटित शुभ्रमुकुट पवित्र भूषण, अनेक प्रकार की मालायें, अंजन, चामर, छत्र, ताड़ का पंखा, दर्पण इन्हें अर्पित कर सभी मंगल वाद्यों को बजाते हुये नीराजन करे।

गीत-नृत्य, जय जयकार के साथ सोने, चाँदी, ताँबे अथवा मिट्टी के शुभ पात्र में कमल पुष्प, बीज, दही, अक्षत आदि से त्रिशूल, शंख, दो कमल, नन्द्यावर्त, करीष, श्रीवत्स, स्वस्तिक, आदर्श, वज्र, अग्नि से चिह्नित आठ दीपक चारों ओर, एक दीपक बीच में रखे।

उनमें वाम आदि नौ शक्तियों का ध्यान कर उनकी पूजा करे। कवच से ढककर, अस्त्रमन्त्र से चारों ओर रक्षा कर धेनुमुद्रा दीखाकर दोनों हाथों से पात्र को उठायें। अथवा उस पात्र में क्रमशः पाँच दीपों को रखे। विदिशाओं में भी एक-एक दीप रखे, एक दीप बीच में रखे तब उस पात्र को उठाकर मूल मन्त्र का ध्यान करते हुये तीन बार लिङ्ग के ऊपर घूमाये।

सुगन्धित भस्म युक्त अर्घ्यजल शिवजी के सिर पर छोड़ दे। फिर पुष्पाञ्जलि समर्पित कर उपहार दे। आचमनी से पीने योग्य जल दे। फिर पंचसुगन्धित से युक्त ताम्बूल अर्पित करे। प्रोक्षणी पदार्थों का प्रोक्षण करके नाच गाना आदि करें।

लिङ्ग में शिव-शिवा का ध्यान कर यथाशक्ति शिव का जप करे। प्रदक्षिणा, प्रणाम, स्तुति करके विनय के साथ अपने कार्यों तथा अपने को उन पर न्यौछावर करे। अर्घ्य, पुष्पांजलि देकर धेनु मुद्रा का प्रदर्शन कर अन्त में देव का हृदय में ध्यान करता हुआ क्षमा प्रार्थना करके उनका विसर्जन करे।

अतिसंकट की स्थिति में अर्घ्य, पाद्य से लेकर मुख वास समर्पण करे अथवा भक्तिपूर्वक केवल पुष्प चढ़ायें। इतना ही परम धर्म है, भाव से ही पुण्य मिलता है। प्राण रहते हुये शिव पूजन किये हुए भोजन न करे यदि कोई पापी भोजन कर लेता है, तो उसके पाप का कोई निराकरण नहीं है।

यदि भूल से खा लेता है, तो प्रयत्न से उसे उगल दे। स्नान करके शिव-शिवा का दूना पूजन कर ब्रह्मचर्य के साथ दस हजार शिव का जप करे। दूसरे दिन यथाशक्ति सुवर्ण आदि शिव को या शिवभक्त को देकर फिर महापूजा करके पवित्र हो जाता है।

## योग भेद वर्णन

मेघनाद ने कहा—ज्ञान, क्रिया तथा पूजा में संग्रह ग्रन्थों से सार लेकर जो आपने कहा, सम्मत है, मैंने उसे सुना। अब मैं परम दुर्लभ योग को साधिकार, अंगों सहित, सविधि तथा सप्रयोजन सुनना चाहता हूँ।

यदि विधिपूर्वक किये योगाभ्यास से मृत्यु होती है और उसे शीघ्र सिद्ध किया जा सकता है जिससे आत्मघाती नहीं हो सकता। वह, उसके कारण और तत्काल के कर्त्तव्य, उसके भेदों तर-तम क्रम को आप ठीक-ठीक कहिये।

रावण ने कहा—सभी प्रश्नों के अर्थ को जानने वाले हे मेघनाद तुमने ठीक समय पर पूछा। उसे क्रमश: मैं सब कहता हूँ। तुम ध्यान से सुनो! मानसिक वृत्तियों को निश्चल मन से लगाना रूपवृत्ति है, वह संक्षेप में योग है।

वह पाँच प्रकार का होता है—मन्त्रयोग, स्पर्शयोग, अभावयोग तथा सबसे बड़ा महायोग माना गया है। मन्त्र के अभ्यास से मन्त्र के वाच्यार्थ गोचर होकर जो मन्त्र से वृत्ति स्थिर हो जाती है, उसी का नाम मन्त्रयोग है।

प्राणायाम युक्त वही मनोवृत्ति स्पर्श योग कही जाती है। वही मन्त्र स्पर्श से मुक्त प्राणायाम भाव भावयोग कहा जाता है।

जिस योग से सम्पूर्ण संसार तिरोहित हुआ सा प्रतीत होता है, वह अभावयोग कहा जाता है। क्योंकि इसमें विद्यमान वस्तुओं का भी भान नहीं होता है।

शिव का स्वभाव ऐसा है कि उसमें उपाधि रहित एक का चिन्तन किया जाता है, अतएव इसे महायोग कहते हैं।

अब योगाधिकार के योग्य पुरुष का परिचय—देखने योग्य प्रजा, पशु आदि सम्पत्ति की प्राप्ति वेदोक्त ज्योतिष्टोम आदि स्वर्ग विषयों से जिसका मन विरक्त है, योग में उसी का अधिकार है, दूसरे का नहीं। विषयद्वय दोष युक्त ईश्वर के गुणों को देख लेने मात्र से मन विरक्त हो जाता है।

अष्टाङ्ग योग हो या षडङ्ग योग हो सभी योग संक्षेप से यम-नियम आदि हैं। उनमें स्वस्वस्तिक आसन आदि प्राणायम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान, समाधि—ये संक्षेप से योग के आठ अंग विद्वानों ने कहे हैं।

आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान, समाधि—संक्षेप से ये षडङ्ग

हैं। शिवशास्त्र में इनके पृथक लक्षण कामिका आदि और शिवागमों ने कहे हैं। योगशास्त्रों में तथा कुछ पुराणों में भी अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह इन्हें पंचावयवयोग के अनुसार सज्जनों ने यम कहा है।

शौच, तुष्टि, तप, प्रणिधि (गुरु सेवा)—ये नियम के पाँच भेद हैं। स्वस्तिक, पद्म, अधर्मेन्दु, विरासन, योगासन, प्रसाधित, पर्य, यथेष्ट—ये आठ आसन हैं।

अपने शरीर से निकली हुई प्राण वस्तु को रोकना प्राणायाम है। वह रेचक, पूरक, कुम्भक भेद से तीन प्रकार का होता है।

नासिका के एक छिद्र को अंगुली से बन्द करके दूसरे छिद्र से उदर स्थित वायु को बाहर निकालना रेचक है। बाहरी वायु से शरीर को मसक की भाँति दूसरे नासापुट से भरने का नाम पूरक है।

फिर उस वायु को न छोड़ना, न लेना, कुम्भ के समान अचल रहने का नाम कुम्भक है। योगसाधन इन रेचक आदि तीन विधियों को करने में शीघ्रता तथा विलम्ब न करे, अपितु इनका क्रमशः अभ्यास करे। रेचक आदि में नाड़ी शोधनपूर्वक अभ्यास करने में अपनी इच्छा ही अन्तिम अवधि है, ऐसा योगानुशासन में कहा है।

पहले छोटी मात्रा, फिर बड़ी मात्रा इस क्रम से प्राणायाम करे। यह छोटी बड़ी मात्रा गुड़ विभाग के अनुसार चार प्रकार की होती है।

प्राणायाम चार प्रकार का होता है। छोटा बारह मात्रा का, मध्यम दो उद्गधात वाला—चौबीस मात्रा का होता है। उत्तम प्राणायाम तीन उद्‌घात छब्बीस मात्रा का होता है।

पसीना, कम्प, आदि जनक प्राणायाम उससे श्रेष्ठ होता है। आनन्द की उत्पत्ति, रोमांच, आँखों से आँसू गिरना, जल्प, भ्रमण—ये लक्षण योगी को प्रतीत होते हैं।

न शीघ्र, न विलम्ब से जानु के चारों ओर घुमाकर जितनी देर में चुटकी बजाया जाय उसे मात्रा कहते हैं। मात्राक्रम से उद्गघात क्रम जानना चाहिए।

नाडीशोधन करके ही प्राणायाम करे। प्राणायाम अगर्भ तथा सगर्भ भेद से दो प्रकार का होता है।

जप ध्यान बिना अगर्भ और जप ध्यान से युक्त सगर्भ है। अगर्भ से सगर्भ प्राणायाम सौ गुना अधिक महत्त्व का है। इसलिये योगी सगर्भ प्राणायाम ही करते हैं। प्राण वायु पर विजय पाने से ही शेष सभी वायु जीते जाते हैं।

शरीर के पाँच वायु ये हैं—प्राण, अपान, समान, उदान और व्यान। नाग, कूर्म, कृकल, देवदत्त, धनञ्जय—जीवनयापन में सहायक होने से इन्हें प्राण कहते हैं।

जो खाये हुये आहार आदि को नीचे की ओर ले जाता है, उसे अपान कहते हैं।

शरीर के सभी अंगों में व्याप्त होने और उन्हें बढ़ाने के कारण से व्यान कहते हैं।

मर्मों को उद्विग्न करने के कारण उसे उदान कहते हैं।

सम्पूर्ण अंगों को समान रखने के कारण उसे समान कहते हैं।

उद्गार (डकार) में नाग, कूर्म आँखों को खोलने तथा बन्द करने में कृकल, छींकने तथा जँभाई लेने में देवदत्त और जो मरे प्राणि को भी नहीं छोड़ता, वह सर्वव्यापी धनञ्जय है।

क्रम से अभ्यास किया हुआ यह प्रमाण युक्त प्राणायाम है। यह प्राणायाम सम्पूर्ण दोषों को भस्म करके कर्त्ता के शरीर की रक्षा करता है।

प्राण वायु को भलीभाँति जीत लेने पर उसके चिह्नों को देखे। इससे मल, मूत्र, कफ कम हो जाता है, बहुत खाने की शक्ति आती है, देर में श्वास आता है, शरीर में हल्कापन, शीघ्रगामिता, उत्सव, स्वर में मधुरता, सब रोगों का नाश, बल, तेज, सुरूपता, धैर्य, बुद्धि, जवानी, स्थिरता, प्रसन्नता, तपस्विता, पापक्षय, यज्ञ, दान, व्रत आदि ये गुण प्राणायाम के सोलहवीं कला के बाराबर नहीं है।

अपने क्रम से विषयों में फैली हुयी मन सहित इन्द्रियों को जो बलपूर्वक रोकता है, उसे प्रत्याहार कहते हैं।

स्वर्ग तथा नरक का कारण क्रमशः निगृहीत इन्द्रियाँ तथा अनिगृहीत इन्द्रियाँ होती हैं। इसलिये सुख का इच्छुक बुद्धिमान् पुरुष ज्ञान वैराग्य में स्थिर हो इन्द्रिय रूपी घोड़ों को शीघ्र नियंत्रित कर अपने से अपना उद्धार करे।

संक्षेप में चित्त को स्थिर करने का नाम धारणा है। शिव ही एक उत्तम स्थान है। औरों में तीनों दोष होते हैं। उचित काल को निश्चित करके उसमें मन लगाकर उसे शिवरूप लक्ष्य से अलग न होने दे।

मन की प्रथम स्थिरता धारणा से ही होती है। इसलिये मन को धारणा के अभ्यास से स्थिर करे।

'ध्यै चिन्तायाम्' धातु से ल्युट् प्रत्यय लगाने से ध्यान शब्द बनता है। अतः इसमें बार-बार शिव का ध्यान होना चाहिए। एकाकार चित्तवृत्ति से ध्यान करना चाहिए। ध्येय में विश्वासपूर्वक मन लगाना ही ध्यान है।

केवल एक पर ही विश्वास करना ध्यान है। परमशिव ही ध्यान करने के योग्य हैं। सबको छोड़कर एक शिव ही कल्याणकारक हैं, अथर्ववेद में यही कहा गया

है, और शिवा का ध्यान करे। ये शिव-शिवा सभी प्राणियों में व्याप्त हैं। इन दोनों को स्मृति तथा शास्त्रों ने सवर्ग, सर्वदा, उदीयमान, सर्वज्ञ कहा है।

अतः अनेक रूपों से इनका सदा ध्यान करना चाहिए। ध्यान के दो प्रयोजन कहे गये हैं। मुक्ति पर विश्वास करना तथा अणिमादि सिद्धियों पर विश्वास करना।

ध्याता, ध्यान, ध्येय तथा ध्यान का प्रयोजन—इन चारों को समझ कर योग को जानने वाला योग प्रारम्भ करे।

ज्ञान वैराग्य से युक्त, श्रद्धालु, क्षमावान्, ममतारहित, सदा उत्साही पुरुष को ध्याता कहा गया है। जप से थक जाये तो फिर ध्यान करे। ध्यान से थक जाये तो फिर जप करे।

### योग मार्ग के विघ्नों का वर्णन

रावण ने कहा—आलस्य, घोर व्याधियाँ, सावधानी, स्थान का संदेह, चित्त की स्थिरता, श्रद्धा तथा ब्रह्म का दिखलायी देना, दुःख, दुर्बुद्धि, विषय भोग के प्रति चंचलता—ये दस योगमार्ग में प्रवृत्त पुरुषों के मार्ग में विघ्न आते हैं।

आलस्य और शिथिलता ये योगियों के देह तथा मन के द्वेष हैं। धातुओं की विषमता से तथा कर्मों के दोषों से व्याधियाँ होती है।

योग साधना के अभाव का नाम प्रमाद है।

यह सत्य है या वह, इस प्रकार के विपरीत ज्ञान का नाम संशय है।

मन की अस्थिरता को ही अनवस्थिति कहते हैं।

योग मार्ग में इसी भाव सहित वृत्ति को अश्रद्धा कहते हैं।

विपरीत बुद्धि को भ्रान्ति कहते हैं।

पुरुषों के मानसिक दुःख को आध्यात्मिक दुःख कहते हैं।

पूर्वजन्म के किये हुये कर्मों से उत्पन्न शारीरिक दुःख को आधिभौतिक कहते हैं।

शस्त्र-आघात, विष भक्षण से उत्पन्न दुःख को आदिदैविक दुःख कहते हैं।

इच्छा के पूर्ण न होने से उत्पन्न दुःख को दौर्मनस्यक कहते हैं।

विविध विषयों में चपलता का नाम विभ्रम है।

इन विघ्नों के शान्त होने पर योग में तत्पर योगी को जो लक्षण दिखलायी देते हैं, वे दिव्य सिद्धि के सूचक होते हैं।

प्रतिभा, श्रवण, दर्शन, वार्ता, आस्वाद, वेदना—ये छः लक्षण योग के अधिक होने पर सिद्धि सूचक होते हैं।

सूक्ष्म, व्यवधान युक्त, अतीत, सुदूर तथा जो वस्तु अभी प्राप्त नहीं है, उसको भी ठीक-ठीक जान लेना यही प्रतिभा है।

बिना प्रयत्न के सभी प्रकार के शब्दों का सुनायी पड़ना, सभी प्राणियों की भाषाओं का ज्ञान वार्ता है।

दिव्य वस्तुओं का बिना प्रयत्न के दर्शन होना ही दर्शन है। दिव्य रसों के आस्वाद करने की शक्ति को ही आस्वाद कहते हैं।

स्पर्श ज्ञान को वेदना कहते हैं। समस्त ब्रह्माण्ड व्यापी दिव्य गन्धों के ज्ञान को वेदना कहते हैं। योगी में ये योगरत्न रहते हैं। ये उन्हें दूसरे को देते भी हैं।

**योगी के ऐश्वर्यों का वर्णन**

इनके मुख से स्वच्छन्द मधुर वाणी निकलती है। इन्हें प्रणाम कर देवांगनाये दिव्य औषधियाँ तथा रसायन देती हैं। ये इन्हें सिद्ध हो जाती है।

योगसिद्धि का थोड़ा सा ज्ञान हो जाने पर मनुष्य मोक्ष मार्ग में प्रवृत्त हो जाता है, जैसा मैंने इसे देखा है, वैसे ही मोक्ष भी हो जायेगा।

प्रसूता, स्थूलता, बचपन, बुढ़ापा, जवानी, अनेक जातियों का स्वरूप तथा चार प्रकार से देह धारण करना, पृथ्वी अंश के बिना प्रतिदिन मनमोहक गन्ध का संग्रह करना—ये आठ पिशाच सम्बन्धी पार्थिवपद के गुण कहे गये हैं।

जल में निवास, भूमि से निकलना, बिना कष्ट के समुद्र को पी जाने में समर्थ, वह इस भूमि में जहाँ चाहे पानी में दिखलाई दे।

बिना घड़े आदि पात्र का जल संग्रह तथा धारण करना और नीरस वस्तु को भी वह योगी खाना चाहता है, तो वह तत्क्षण सरस हो जाती है।

वह जल, तेज, वायु का रूप धारण कर सकता है। वह पार्थिव शरीर को छिद्र रहित धारण कर सकता है। यह सोलह आश्चर्यकारक गुण जलीय ऐश्वर्य के हैं।

शरीर से अग्नि को प्रकट करना और दाह का भय न होना। यदि वह चाहे तो विना यत्न के सम्पूर्ण शरीर को जला सकता है। अग्नि को पानी में या हाथ में रखना, सृष्टि को भस्म करके पूर्ववत् कर देना, मुख में अन्न आदि को पका देना, तेज और वायु से शरीर-निर्माण शक्ति जलीय ऐश्वर्य से युक्त होना, ये चौबीस प्रकार का तेज कहा जाता है।

मन के समान वेग का हाथ, क्षण भर में दूसरे के हाथ में प्रवेश कर जाना, बिना प्रयत्न के पर्वत आदि महाभार को धारण कर लेना, भारी का हल्का होना, हाथ से वायु को पकड़ना, अंगुलि के अगले भाग को रखते ही पृथ्वी को कँपा देना, एक वायु से ही शरीर को धारण करना, भोग तथा तेज से युक्त होना, वायु के बत्तीस ऐश्वर्य विद्वान् जानते हैं।

आकाश के ऐश्वर्य—छाया की हीनता, असमाप्ति, इन्द्रियों को न दिखलाई

देना, इच्छानुसार आकाश में विचरण करना, इन्द्रियों को अर्थों का परस्पर समन्वय, आकाश को लाँघना, उसका अपने शरीर में समावेश, आकाश को पिण्ड जैसा बना लेना, शरीर को लुप्त कर देना—ये महान् चालीस गुण वायु के हैं।

इन्द्र का ऐश्वर्य ही आकाश का ऐश्वर्य है। यथा काम प्राप्ति और यथा काम सिद्धि सभी को पराजित करना, सभी गुप्त पदार्थों को देखना कर्म के अनुसार निर्माण, वश में करना सुरूपता, एक ही स्थान में रहकर सम्पूर्ण संसार का दर्शन होना, इन्द्र के समान ऐश्वर्यों की प्राप्ति—ये चन्द्रमा के ऐश्वर्य हैं, जो मानस गुणों से भी अधिक है।

संसार में रहने वाला सभी प्राणियों को काटना, मारना, पीटना, बाँधना, छोड़ना, पकड़ना और उन पर प्रसन्न होना, मृत्यु तथा काल पर विजय पाना—ये अभिमान युक्त ऐश्वर्य प्रजापति के गुण हैं। ये चन्द्रमा के भागों से छप्पन गुण अधिक है।

इस शक्ति को प्राप्त कर लेने से योगी पुरुष संकल्प मात्र से सिद्धि, पालन, संहार कर सकता है।

सभी प्राणियों के मन में अपना अधिकार कर लेना और सबसे अलग रहकर वह संसार की रचना कर सकता है। भला, बुरा करने में समर्थ, प्रजापत्य ऐश्वर्य से संयुक्त चौंसठ गुणों वाला ब्रह्मा का ऐश्वर्य कहा जाता है।

इस बुद्धि से किये गये ऐश्वर्य को प्राकृत ऐश्वर्य कहते हैं। उसे वैष्णव तत्त्व कहा गया है। उसी से ये भुवन स्थित है। ब्रह्मा भी उस पद का पूर्ण रूप से वर्णन नहीं कर सकते, औरों की क्या शक्ति है।

उनका पुरुषार्थ सगुण है, उसके आगे ऐश्वर्य सम्पन्न गणेश का पद है, उस पद का कुछ ज्ञान विष्णु को है, औरों को नहीं।

परम ऐश्वर्य की सिद्धि नहीं होती है, इसलिये देवता, असुर, मनुष्यों के गुणों को तृणवत् छोड़ देता है, उसे उत्तम योग सिद्धि मिलती है अथवा संसार के अनुग्रह की इच्छा हो तो वह मुनि की भाँति विचरण करे, तब वह सभी भोगों को भोग कर मुक्ति को प्राप्त करेगा।

### योग योग्य स्थान आदि वर्णन

अब मैं योग के प्रयोग को कहता हूँ, तुम सावधान होकर सुनो—

शुभ समय में उत्तम स्थान क्षेत्र आदि पर, एकान्त वन में, शान्त एवं बाधारहित, लिपी हुयी भूमि में धूप आदि से सुवासित फूल आदि को बिखेर कर वितान आदि से सुशोभित योगी पुरुष कुश, फूल, समाधि, जल, फल, फूल युक्त, अग्नि, जल तथा सूखे पत्तों के समूह में, डास, मच्छर, साँप, श्वापद, दुष्ट मृग, दुर्जन

आदि जहाँ न हो और जहाँ किसी प्रकार का भय न हो, श्मशान, चैत्य, वल्मीक, पुराना घर, चौराहा, नदी तथा नद के तट पर, समुद्र तट पर, गली के समीप, पुराने बगीचे, गोशाला आदि में, अशुभ या निन्दित स्थान में, अजीर्ण होने पर, खट्टे डकार आने पर, मल तथा मूत्र से मलिन, उल्टी या अतिसार, अधिक खा लेने पर, थकान में, अधिक चिन्तित स्थिति में, न भूख, प्यास में, अपने गुरु की सेवा में लगा हुआ भी योग न करे।

ठीक आहार-विहार में तथा अपने कर्म में लगा हुआ ठीक समय पर सोने तथा जगने वाला, सभी प्रकार के परिश्रमों से मुक्त, मृदु, रमणीय, ऊँचा, बराबर तथा पवित्र आसन हो, पद्म तथा स्वस्तिक आसनों का प्रयोग करे।

**योग प्रयोग कथन**

अपने गुरु पर्यन्त प्रणाम करने योग्य को क्रम से प्रणाम करे। सीधी गर्दन, सिर, छाती करके बैठे और आँखें अधिक बन्द न करे।

सिर कुछ झुका रहे, दाँतों को दाँतों से न कटकटाये, दाँतों के आगे जीभ को रखकर उसे स्थिर रखे। एड़ियों से अण्डकोषों तथा लिङ्ग की रक्षा करे। जाँघों के ऊपर सावधानी से तिरछी भुजा को रखकर दाहिने हाथ के पिछले भाग को बायें हाथ के ऊपर रखे।

धीरे-धीरे पीठ को उठाकर और आगे से छाती को तान कर दिशाओं की ओर न देख अपनी नासिका के अग्र भाग को देखे।

प्राणवायु के संचार को रोक कर पत्थर की भाँति स्थिर होकर अपने मन में पार्वती के साथ शिव का ध्यान करे और उन्हें हृदय कमल के बीच में मूलाधार में, नासिका के अग्र भाग में, नाभि में, कण्ठ में अथवा तालु के छिद्रों में बैठाकर ध्यान यज्ञ से पूजे।

अथवा दोनों भौंहों के बीच में, ललाट में, मूर्धा में उनके दिव्य आसन की यथोचित्त कल्पना करके वहाँ आवरण युक्त अथवा आवरण रहित द्विदल, षोडशार, द्वादशार, दशार, षडस्त्र या चतुरस्त्र में शिव का स्मरण करे।

भौंहों के बीच में दो पत्र वाला कमल के समान उज्ज्वल कमल बनाये। भौंहों के बीच में स्थित कमल के उत्तर तथा दक्षिण बिजली के समान वर्ण वाले पत्तों के अन्त में षोडशार के पत्तों में सोलह स्वरों को स्थापित करे और कमल कन्द की जड़ से पूर्व आदि क्रम से क से ट तक वर्णों को स्थापित करे।

सूर्यवर्ण कमल के चारों ओर उन वर्णों का हृदय में ध्यान करे। उन अक्षरों को कमल पत्र समझें। नाभि के ऊपर की ओर गाय के दूध के समान ड से फ तक

इन्हें क्रम से रखे, नीचे की ओर ये कमल के छः पत्ते हैं। धुआँ रहित अंगार के वर्ण वाले ब से ल तक वर्ण उसमें हैं। मूलाधार कमल सुवर्ण के सामन कांतियुक्त है।

उसमें व से स तक वर्ण पर्णमय है। इन कमलों में जहाँ मन रम जाये, वहीं धैर्यपूर्वक शिव-शिवा का चिन्तन करे।

अंगुष्ठ मात्र निर्मल, चारों ओर से प्रकाशमान दीपक की लौ के सदृश शुद्ध, अपनी शक्ति से सुशोभित चन्द्र रेखा के समान आकार वाले अथवा तारा के सदृश, मिवार, शूक अथवा कमलनाल के रेशा जैसे कदम्ब के फल जैसा, ओस के बूँद जैसा अथवा पृथिवी तत्त्व जैसा ध्यान करने वाला उसे समझता है।

अत: उन तत्त्वों के स्वामियों के स्थूल मूर्तियों का चिन्तन करे। ब्रह्मा, भव से लेकर सदाशिव पर्यन्त शिवजी की आठ मूर्तियाँ हैं। शिवजी की स्थूल मूर्तियों का निर्देश शिवपुराण में है।

मुनिवरों ने उन्हें घोर, मिश्र तथा प्रशान्त संज्ञायें दी हैं। फल की अभिलाषा से युक्त (अथवा-रहित) पुरुषों को इनका ध्यान करना चाहिए—ऐसा चिन्तन कुशल पुरुषों ने कहा है।

घोरसंज्ञक मूर्तियों का चिन्तन करने से पापों का नाश होता है। मिश्रसंज्ञक मूर्तियों का ध्यान करने से देर में और सौम्य (प्रशान्त) मूर्तियों का ध्यान करने से न शीघ्र और न देर में सौम्य का ध्यान करने से विशेष करके शान्ति, प्रज्ञा तथा मुक्ति मिलती है तथा सभी सिद्धियाँ इसके चिन्तन से प्राप्त हो जाती है, इसमें संदेह नहीं है।

## नैमित्तिक कर्म पालन

रावण ने कहा—अब मैं शिवाश्रम का सेवन करने वालों के लिये शिवशास्त्र के अनुसार नैमित्तिक विधि को क्रम से कहता हूँ। सभी महीनों के दोनों पक्षों में अष्टमी, चतुर्दशी तथा पर्व दिन में शुभ अयन में, समान रात-दिन वाले मास में विशेषकर प्रणव में यथाशक्ति विशेष पूजा करनी चाहिए।

प्रत्येक मास में यथोचित ब्रह्मकूर्च (पंचगव्य) को बनाकर व्रती पुरुष उससे शिव जी को स्नान कराये, शेष पंचगव्य को पी ले। ब्रह्महत्या आदि महान् दोषों की निवृत्ति पंचगव्य को पीने से हो जाती है, कुछ शेष नहीं रहते।

पौष मास के पुष्य नक्षत्र में शिवजी का निराजन करे। माघ महीने में मघा नक्षत्र के दिन घी और कम्बल का दान करे। फाल्गुन में उत्तराफाल्गुनी युक्त पूर्णमासी को महोत्सव करे।

चैत्र में चित्रा नक्षत्र युक्त पूर्णिमा को यथाविधि दोलोत्सव करे। वैशाख में

विशाखा युक्त पूर्णिमा को फूलों का शिव मन्दिर बनाये। ज्येष्ठ में मूल नक्षत्र के दिन शीतल जल युक्त घड़ा का दान करे।

आषाढ़ मास के उत्तराषाढा नक्षत्र में पवित्रारोपण करे। श्रावण में पूर्वोक्त और मण्डलों की स्थापना करे। श्रवण नक्षत्र में, उसके बाद भाद्रपद मास की पूर्णिमा को प्रोक्षण कर पूर्वाषाढा नक्षत्र के दिन जल की क्रीड़ा करे।

अश्विनी पूर्णिमा के दिन खीर तथा नये चावलों का भात दे, शतभिषा नक्षत्र में खीर से हवन करे। कार्त्तिक पूर्णिमा के दिन कृत्तिका नक्षत्र में हजार दीप जलाये। मार्गशीर्ष में आर्द्रा नक्षत्र के दिन घी से शिव जी को स्नान कराये।

इन समयों में उक्त कर्मों को करने में असमर्थता हो तो उत्सव ही करे। सभा, महापूजा या अधिक पूजन करे। प्रशस्त कर्मों में कल्याण की पुनरावृत्ति होने पर, मन से दुखी होने पर, दुराचार में, दुस्वप्न में, दुष्ट दर्शन में, उत्पात दर्शन में, अन्य अशुभ में, प्रबल रोग में होने पर स्नान, पूजा, जप, ध्यान, होम आदि क्रियायें करे।

कारण के अनुरूप उक्त कर्मों को पूरश्चरणपूर्वक शिवाग्नि का पुनः स्थापना करे। जो इस प्रकार प्रतिदिन शिवधर्म में तत्पर रहता है, उसे शिवजी एक जन्म में ही मुक्ति दे देते हैं।

जो नित्य नैमित्तिक कर्मों को इस प्रकार करता है, वह श्रीकण्ठ नाथ के दिव्य आदि स्थान को जाता है। वह मनुष्य वहाँ सौ करोड़ कल्पों तक महाभोगों को भोग कर कालान्तर में वहाँ से छुटकर उमा, कार्त्तिकेय के लोकों को पाकर, ब्रह्मा, विष्णु, रुद्र के लोकों में विशेष रूप से चिरकाल तक रहकर तथा वहाँ के सुख भोगों को भोगकर ऊपर के लोकों में गया हुआ वह उन पाँच स्थानों से छूटकर श्रीकण्ठ देव से ज्ञान पाकर उसके कारण शिवपुर को जाता है।

पूर्वोक्त अनुष्ठानों को आधा ही करने से या दो बार में—ऐसा करने से बाद में ज्ञान पाकर शिव सायुज्य को प्राप्त होता है। जो पुरुष आधे से भी आधा करता है वह मरने के बाद ब्रह्माण्ड अथवा ऊपर के अव्यक्त भुवनों को पारकर गिरिजापति के पौरुष रुद्र स्थान को प्राप्त होकर अनेक हजार युगों तक अनेक प्रकार के भोगों को भोगकर पुण्यों के क्षीण होने पर भूलोक में उच्च कुल में पैदा होता है।

पूर्व संस्कारों के कारण वहाँ भी तेजस्वी होता है। वह सामान्य प्राणियों के धर्मों को छोड़कर शिवधर्म में तत्पर होता है। उस धर्म की श्रेष्ठता से वह शिव का ध्यान कर शिवपुर को जाता है। फिर अनेक भोगों को भोगकर विद्येश्वरपद को पा जाता है।

वहाँ क्रमशः विद्येश्वरों के अनेक भोगों को भोगकर ब्रह्माण्ड के भीतर बाहर

एक बार वह फिर लौटता है। फिर वह उत्तम भक्ति को पाकर उसी से शिवज्ञान को पाकर शिव साधर्म्य को प्राप्त कर लेता है।

जिससे वह फिर संसार में नहीं आता; और जो विषयासक्त की भाँति शिवभक्त है, वह शिव धर्म को करे या न करे वह मुमुक्षु एक, दो, तीन बार जन्म लेकर मुक्त हो जाता है।

वह शिवधर्म का अधिकारी चक्र की भाँति अनेक योनियों में घूमता नहीं। इसलिये किसी भी प्रकार शिव की शरण में जाना चाहिए। यदि कल्याण के लिये उद्यम करना हो तो शिवधर्म में बुद्धि लगाये।

हम किसी को किसी बन्धन में नहीं डालते। इसमें कोई बन्धन या हठ नहीं है, क्योंकि यह हमारे स्वभाव विरुद्ध है। दूसरे को अपने पूर्ण संस्कारों की महानता से अच्छा लगता हो वही करें।

संसार का कारण जिनकों उस स्थान पर खड़ा करने में समर्थ नहीं है यह प्रकृति के अनुकूल है। इस प्रकार भली-भाँति विचार करे। यदि अपना भला चाहते हैं तो शिवधर्म पर अपना अधिकार करे।

**काम्य कर्म का फल**

मेघनाद ने कहा—हे पिजाश्री ! मैंने आपके मुख से वेदों के समान प्रामाणिक वचन सुने। जो शिवभक्तों के लिये आपने नित्य नैमित्तिक विधि कही है।

अब मैं शिवधर्माकारियों का जो काम्य कर्म है, उसे सुनना चाहता हूँ, आप उसे कहे।

रावण ने कहा—इस लोक का और कुछ उस लोक का फल है। यह यहाँ और वहाँ का कर्म पाँच प्रकार का है। कुछ लौकिक कर्म हैं और कुछ तपोमय कर्म हैं, कुछ जप ध्यानमय कर्म है तथा कुछ सर्वमय हैं।

होम, दान, अर्चन क्रम से क्रियामय कर्म भी हैं। ये कर्म शक्तिमानों के ही सफल होते हैं, दूसरे के नही। अत: आज्ञापालक ब्राह्मण काम्य कर्मों को सदा करता रहे। अब मैं दोनों लोकों में फलप्रद काम्य कर्मों को कहता हूँ। शिव या महेश्वर भक्तों को भीतर बाहर के क्रम से इन कर्मों को करना चाहिए। क्योंकि शिवमहेश्वर में कोई भेद नहीं है।

इसलिये शिव या महेश्वर के भक्तों में कोई भेद नहीं है। शिव के आश्रम में रहने वाले ज्ञानयज्ञ रत मनुष्य कर्मयज्ञ के करने वाले पृथ्वी में माहेश्वर कहे जाते है। इसलिये शैव भीतरी और माहेश्वर बाहरी कर्म करते हैं।

आगे कहे जाने वाले कर्म के प्रयोग में कोई भेद नहीं है। गन्ध, वर्ण, रस

आदि से भूमि की यथा विधि परीक्षा कर ले। मन के अनुसार सुन्दर, वीतान, तान कर, दर्पण के समान समतल भूमि को लीपकर शास्त्रीय दृष्टि से पूर्व की ओर एक या दो हाथ का मण्डल बनाये, उस पर सुन्दर कमल लिखे, जो अष्टदल तथा कर्णिका युक्त हो, उसे रत्न, स्वर्ण आदि के चूर्ण से सजाये।

उसे पाँच आवर्णों से युक्त कर सुशोभित करें। उसके दलों में सिद्धियों और केसरों में शक्तियों की कल्पना करे। वामदेव आदि आठ रुद्रों को पूर्व आदि दलों में क्रमश: स्थापित करे तथा कर्णिका में वैराग्य तथा बीजों में नौ शक्तियों की कल्पना करे।

कन्द में शिवात्मक धर्म, नाल में शिवाश्रित ज्ञान, कर्णिका के ऊपर अग्नि, सूर्य तथा चन्द्र मण्डल बनाये। उसके बाद शिव विद्यात्मक तीन तत्त्व तथा सब आसनों के ऊपर सुखद रंग-बिरंगे फूलों से तथा पंचावरण से युक्त पार्वती सहित शुद्ध स्फटिक के सदृश, प्रसन्न, शीतल कान्ति वाले देव की पूजा करे।

बिजली के कंकण के समान जटामुकुट से सुशोभित, बाघम्बर धारण किये हुये मन्द हास्य युक्त मुख कमल वाले लाल कमल जैसे जिनके पैर, हाथ, ओठ हैं, सब लक्षणों से युक्त, सभी आभूषणों से सुशोभित दिव्य आयुधों को धारण किये हुये, दिव्य गन्धों का अनुलेपन किये हुये, पाँच मुख, दस हाथ, शिखा में चन्द्रकला युक्त इनका पूर्वमुख सौम्य बालसूर्य के समान कान्ति वाला, तीन नेत्र कमल के समान मनोहर, सिर पर बालचन्द्रमा दाहिना नीले मेघ के समान कान्ति वाला, भृकुटि कुटिल तथा घोर, तीन आँखें लाल असह्य भयंकर दाढे, फड़कता हुआ होठ, उत्तर मुख मूंगे के समान तथा नीले बालों से सुशोभित विलास युक्त तीन नेत्र, चन्द्रमा के आभूषण से युक्त शेखर, पश्चिम मुख पूर्ण चन्द्र के समान तीन नेत्रों से शोभित चन्द्रकला धारण किये, सौम्यमूर्ति, मन्द हास्य से मनोहर, पाँचवाँ मुख स्फटिक मणि के समान चन्द्र रेखा से उज्जवल अत्यन्त सौम्य, खुले हुए तीन नेत्रों से शोभित, दाहिने हाथ में शूल, परशु, वज्र, खड्ग और अग्नि से उज्जवल बायें हाथ में नाग, बाण, घण्टा, पाश, अंकुश, निवृत्त कला से जानु अप्रतिष्ठा काल से नाभि सम्बद्ध कण्ठ तप विद्या कला और ललाट तक शान्ताकला से प्रतिष्ठित है।

उसके ऊपर शान्त्यतीत पराकला से युक्त है। पंचाध्वव्यापी साक्षात् कलापंचकस्वरूप, ईशान मुकुट देव जो पुरातन पुरुष है। अघोर जिनका हृदय है, वामदेव महेश्वर जिनके गुह्य हैं और सद्योजात जिनके चरण है वह अड़तीस कलामय मूर्ति हैं। ये ईशान मातृकामय तथा पंचब्रह्ममय हैं।

ये ॐकारमय तथा हंस शक्ति से युक्त हैं। जो इच्छात्मिका शक्ति से

कमण्डलों में आरूढ हैं। जो ज्ञानाख्या कला से दक्षिण की ओर क्रियाख्या कला से बायीं ओर विराजमान हैं। सदाशिव साक्षात् तत्वत्रय हैं अथवा वे विद्यामूर्ति हैं।

मूर्ति मूल संकल्प करके क्रमश: उनका संकलन करें। मूल विद्या से यथाविधि अर्घ्यदान पर्यन्त पूजा कर परम शक्ति के साथ साक्षात् मूर्तिमान शिव का आवाहन करके जो सत्-असत् विवेक से रहित, उन परमेश्वर का पंचोपचार से पूजन कर षडङ्गोक्त प्रणव पूर्वक वेद मन्त्रों से मातृकाओं के साथ क्रमश: पूजन करे।

शान्ति मन्त्रों से तथा और वेद मन्त्रों से पूर्णरूप से अथवा केवल शिवमन्त्रों से महादेव का पूजन करे। पाद्य से लेकर मुखवास पर्यन्त विसर्जन के विना करे। यथाविधि पंचावरण पूजा को भी आरम्भ करे।

### ध्यान की महिमा

रावण ने कहा—श्रीकण्ठ नाथ का स्मरण करने वालों की सभी अर्थों की सिद्धियाँ हो जाती है और वे प्रसिद्ध हो जाते हैं—ऐसा मानकर कुछ लोग मन की स्थिति के लिये स्थूल रूप का ध्यान करते हैं। जब स्थूल रूप में मन स्थिर हो जाय तब सूक्ष्म का ध्यान करना चाहिए।

शिव का ध्यान करने से सभी सिद्धियाँ सिद्ध हो जाती हैं। दूसरी मूर्तियों का ध्यान करने पर फिर शिव रूप का ध्यान करे। मन की स्थिरता को देखकर बार-बार उसका ध्यान करे। पहले सविषय, फिर विषय रहित ध्यान करे।

सज्जनों का मत है कि निर्विषयक ध्यान होता ही नहीं। बुद्धि की निरन्तरा का नाम ही ध्यान है। अत: निर्विषयक ध्यान केवल इस संसार में ही प्रवृत्त होता है।

इसलिये सविषयक ध्यान सूर्य की किरणों के समान आश्रय वाला है। सूक्ष्म आश्रय का नाम ही निर्विषय है। इससे अधिक परिमार्थ और कोई नहीं है। अथवा सविषय ध्यान साकार के आश्रय वाला है।

निराकार आत्मा को जानने का ही नाम निर्विषय है। वह निर्बीज हो या सबीज हो उसी को ध्यान कहते हैं।

निराकार के आश्रय से साकार आश्रय वाला होता है। अत: पहले बीज सहित साकार का ध्यान करे। अन्त में निर्विषय ध्यान करे, निर्बीज ध्यान सभी सिद्धियों को देता है।

प्राणायाम से दिव्य शान्ति आदि से यह सिद्धियाँ मिलती है—शान्ति, प्रशान्ति, दीप्ति तथा प्रसाद। सभी आपत्तियों की शान्ति का नाम श्रम है। भीतर बाहर अन्य कार्य के नाश का नाम प्रशान्ति है। बाहर-भीतर प्रकाश का नाम दीप्ति है। बुद्धि

की स्वस्थता का नाम प्रसाद है। उसमें बाहर-भीतर के सभी अवयव कारण हैं। बुद्धि के प्रसाद से ये शीघ्र सिद्ध हो जाते हैं।

ध्याता, ध्यान, ध्येय तथा ध्यान का प्रयोजन चारों को जानकर ही ज्ञान, वैराग्य तथा शान्त चित्त ध्यान करने का इच्छुक ध्यान करे। श्रद्धावान् तथा प्रसन्नचित्त पुरुषों को सज्जनों ने ध्याता कहा है।

'ध्यान शब्द' 'ध्यै चिन्तायाम्' से बना है। इसके द्वारा बार-बार शिव का ध्यान करे।

क्षण भर श्रद्धा से किया गया परमेश्वर का ध्यान थोड़ा भी योगाभ्यास से पापों का नाश करता है। मन में किसी प्रकार की हलचल न हो इसी को ध्यान कहते हैं। इस प्रवाह रूपी ध्यान का सहारा बुद्धि है।

जो ध्येय वस्तु है, वह है साम्ब सदाशिव—ऐसा विद्वानों का मत है। मुक्ति प्राप्ति के पहले अणिमा आदि आठ ऐश्वर्यों की प्राप्ति होती है। शिवध्यान का यही साक्षात् प्रतिफल है। जिस ध्यान से सभी प्रकार के सुख तथा सम्पत्ति मिलती है उसे सब कुछ करना चाहिए। बिना ध्यान के ज्ञान नहीं मिलता; जो योगी नहीं है, वह ध्यान नहीं कर सकता। ध्यान और ज्ञान दोनों ही जिसके पास हैं उसने भवसागर पार कर लिया।

प्रसन्न, एकाग्रचित्त तथा समस्त उपाधियों से रहित का नाम ज्ञान है। यह ज्ञान योगी को ही प्राप्त होता है।

जब सब पाप क्षीण हो जाते हैं तब ज्ञान, ध्यान में बुद्धि लगती है। पापियों को तो ज्ञान तथा ध्यान की बात भी दुर्लभ होती है। जैसे जलती हुयी आग सूखे तथा गीले पदार्थों को जला देती है, वैसे ही ध्यान रूपी आग शुभ अशुभ कर्मों को जला देती है।

छोटा भी दीपक बहुत बड़े अन्धकार को मिटा देता है। उसी प्रकार थोड़ा भी योगाभ्यास बहुत बड़े पापों का नाश कर देता है। क्षणभर भी श्रद्धा से परमेश्वर का ध्यान करने से जो महान् कल्याण होता है, उसका कभी अन्त नहीं होता है।

ध्यान के समान कोई तीर्थ, तप तथा यज्ञ नहीं है। इसलिये परमेश्वर का सदा ध्यान करे। योगी पुरुष आत्मविश्वास के कारण जलपूर्ण तीर्थों तथा मिट्टी, पत्थर की मूर्तियों की शरण में नहीं जाते।

योगियों का सूक्ष्म शरीर प्रत्यक्ष शिवमय होता है। सामान्य पुरषों के लिये वह मिट्टी काष्ठ आदि का बनाया जाता है, जिस प्रकार राजा को भीतरी सेवक प्रिय होते हैं; न कि बाहरी। वैसे ही अन्त:ध्यान में तत्पर भक्त शिवजी को प्रिय होते हैं न

कि बाहरी। जैसे राजभवन में बाहरी कर्मचारी अधिक लाभ के भागी नहीं होते, वैसे ही यहाँ के सेवक भी हैं।

यदि ज्ञानयोग के लिये तत्पर भक्त मर जाते हैं, तो वे योग का प्रयत्न करने मात्र से रुद्र लोक से बाहर जाते हैं। वहाँ सुख भोग कर वह फिर योगियों के कुल में जन्म लेता है। फिर वह ज्ञान योग को पाकर भवबन्धन से मुक्त हो जाता है।

शिवयोग को जानने का इच्छुक पुरुष भी जिस शुभ गति को प्राप्त होता है, उस गति को महायज्ञ करने वाला भी नहीं पा सकता।

वेदों के ज्ञाता करोड़ ब्राह्मणों को पूजने का जो फल होता है, शिवयोगी को भिक्षा देने मात्र से वह फल मिल जाता है। यज्ञ, अग्निहोत्र, दान, तीर्थों में होम करने का जो फल होता है, वह फल शिव योगी को अन्न दान करने के समान ही है।

जो मूर्ख शिवयोगियों की निन्दा करते हैं, वह अन्य श्रोताओं के साथ प्रलय पर्यन्त नरक-यातना भोगते हैं। श्रोता होकर जो वक्ता से शिव योगियों की निन्दा सुनता है वह श्रोता महान् लोगों द्वारा दण्डनीय होता है और जो सदैव भक्ति से शिवयोगियों की भक्ति से सेवा करते हैं, वे महाभोगों को प्राप्त कर अन्त में शिवयोगी होते हैं।

इसलिये सुख भोग के इच्छुक मनुष्यों को चाहिए कि वे शिव योगियों का पूजन करे। घर, अन्न, पान, शैय्या, गद्दा, रजाई आदि देकर उनकी सहायता करे। योग धर्म ठोस है, वह पाप मुद्गरों से नष्ट नहीं किया जा सकता।

जैसे चावलों से वज्र नहीं टूटता, वैसे ही पाप से योगी नष्ट नहीं होते। वे पाप समूह से वैसे लिप्त होते हैं, जैसे कमल पत्र जल से।

जिस देश में शिव योगी मुनि निवास करता है, उसके कारण वह देश भी पवित्र हो जाता है। उसके पवित्र होने में क्या संदेह है; इसलिये बुद्धिमान् अन्य सभी कार्यों को छोड़कर सभी दुःखों का नाश करने के लिये शिव योग का अभ्यास करे।

योगफल की सिद्धि हो जाने पर योगी पुरुष संसार के हित की इच्छा से इच्छानुसार भोगों का भोग कर विचरण करे या साधारण व्यवहार करे अथवा विषय सम्बन्धी सुखों को तुच्छ समझकर इन्हें छोड़कर विरक्त होकर कर्मों को छोड़ दे।

जो योगी मनुष्य अरिष्ट लक्षणों को देखकर 'मृत्यु समीप आ गयी है' ऐसा जानकर योगाभ्यास में तत्पर हो कर शिवक्षेत्र का आश्रय ले। धैर्यवान् पुरुष वहाँ रहते हुये भी रोग आदि के बिना स्वयं भी प्राणों का त्याग कर दे।

उपवास करके अथवा अपने अंगों का शिवाग्नि में हवन करके अथवा तीर्थों में डुबकी लगाकर अपने शरीर को छोड़ दे। शिव शास्त्रोक्त विधि से जो अपने प्राणों को छोड़ता है, वह तत्काल मुक्त होता है, इसमें संदेह नहीं।

रोग आदि से विवश होकर जिसने शिवक्षेत्र का आश्रय लिया है और वह मर गया हो तो वह नि:संदेह मुक्त हो जाता है, जैसे उपवास आदि से हुयी मृत्यु को श्रेष्ठ कहा गया है। अत: शास्त्र पर विश्वास करने वाले को मन से इस क्रिया को करना चाहिए।

शिवनिन्दक का वध करके जो स्वयं भी घायल होकर जो इन न छोड़ने योग्य प्राणों को भी छोड़ता है, उसका पुर्नजन्म नहीं होता। शिव निन्दा करने वाले को मारने में असमर्थ जो स्वयं मर जाता है, वह इक्कीस कुलों के साथ स्वंय मुक्त हो जाता है।

जो शिवजी के लिये या शिवभक्त के लिये प्राणों को छोड़ता है, उसके समान कोई दूसरा पुरुष मुक्ति का अधिकारी नहीं है। उसकी संसार मण्डल से शीघ्र मुक्ति हो जाती है। इनमें से किसी एक उपाय का सहारा ले।

विधिवत् षडध्वशुद्धि किया हुआ पुरुष यदि मर जाता है, तो पशुओं की भाँति उसका क्रियाकर्म न करे। उसके पुत्र पौत्रादि को अशौच नहीं लगता। उसके शरीर को भूमि में गाड़ दे या पवित्र अग्नि में उसे जला दे या पवित्र जल में बहा दे। अथवा मिट्टी, लकड़ी की भाँति फेंक दे।

यदि इसके क्रिया कर्म करने की इच्छा हो, तो मंगल करे। शिवभक्तों को भोजन कराये। शिवभक्त सन्तान उसके धन की उत्तराधिकारी हो सकती है। ऐसी सन्तान न हो तो उस सम्पत्ति को शिव के लिये दे दे। उस धन सम्पत्ति को मूर्ख सन्तान को न दे।

॥ इस प्रकार रावणसंहितान्तर्गत सदाशिव उपासना पञ्चम परिच्छेद सरल, सुबोध हिन्दी भाषा में मैथिल आचार्य शिवकान्त झा द्वारा सुसम्पन्नता को प्राप्त हुआ॥५॥

॥ शुभमिति ॥

□□□

श्री ठाकुर प्रसाद पुस्तक भण्डार

कचौड़ीगली, वाराणसी २२१००१

नमस्कार

PDF CREAT BY

RAJKUMAR RAMJI
SONI

SHIV-VIHAR COLONY
(DEVNAGERI) RAIPUR (C.G)
RAIPURA
MO:- 97544-23544
81036-97154

Thank for Reading
All